Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 131 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शनिवार 09 नवम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

धन का यदि संग्रह करते हैं, उसका त्याग नहीं करते तो वह धन हमारे लिये अभिशाप बन जाता है।

Accumulation of wealth becomes curse in the absence of its abandonment.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

इंडियन रोड कांग्रेस के 83वें वार्षिक अधिवेशन में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने की घोषणा

छत्तीसगढ़ में चार राष्ट्रीय राजमार्गों को फोरलेन करने राशि मंजूर, रायपुर में चार फ्लाईओवर बनेंगे

दो साल में अमेरिकन सड़कों के नेटवर्क की तरह होगा छत्तीसगढ़ का नेटवर्क, 20 हजार करोड़ रुपए के कार्यों की दी स्वीकृति

मुख्यमंत्री साय ने कहा- मजबूत अर्थव्यवस्था के निर्माण में सड़कें हमारी सबसे बड़ी ताकत

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के नेशनल हाइवे का नेटवर्क दो साल के अंदर अमेरिकन नेटवर्क के बराबर होगा, आज मैं यह विश्वास दिलाता हूँ, आपने जो छत्तीसगढ़ राज्य के लिए मांगे रखी हैं वे सब देंगे। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने आज रायपुर में आयोजित हो रहे भारतीय सड़क कांग्रेस के 83वें वार्षिक अधिवेशन के शुभारंभ कार्यक्रम में ये बातें कहीं। उन्होंने इस मौके पर छत्तीसगढ़ में सड़कों के विकास के लिए 20 हजार करोड़ रुपए के कार्यों की स्वीकृति दी। इनमें चार राष्ट्रीय राजमार्गों में फोरलेन के लिए डीपीआर की स्वीकृति भी शामिल है। श्री गडकरी ने धमतरी से जगदलपुर, रायपुर से बलौदाबाजार-सारंगढ़, कटघोरा से अम्बिकापुर और बिलासपुर से अकलतरा- रायगढ़ से ओडिशा बार्डर तक के राष्ट्रीय राजमार्गों को फोरलेन करने के लिए राशि स्वीकृत करने की घोषणा की। उन्होंने छत्तीसगढ़ में कई सिंगल लेन और टू लेन सड़कों के निर्माण के लिए भी राशि मंजूर की। श्री गडकरी ने रायपुर में सरोना, उद्योग भवन, तेलीबांधा और धनेली जंक्शन में फ्लाईओवर निर्माण के लिए भी राशि स्वीकृत करने की घोषणा की। उन्होंने तीन सड़कों के वन टाइम इंप्रूवमेंट कार्यों की भी मंजूरी दी। श्री गडकरी ने सड़कों के निर्माण लिए केन्द्रीय सड़क निधि (सीआरएफ) से 900 करोड़ रूपए देने की भी घोषणा की।

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने आज रायपुर के साइंस कॉलेज परिसर में भारतीय सड़क कांग्रेस के अधिवेशन का शुभारंभ करते हुए कहा कि इंडियन रोड कांग्रेस में देश के विभिन्न राज्यों से आये सभी इंजीनियर्स को मैं देश के विश्वकर्मा के रूप में मानता हूँ। राष्ट्र के निर्माण में आप सबका बहुत बड़ा योगदान है। हमारे प्रधानमंत्री का मिशन है कि हम हिंदुस्तान को 5 ट्रिलियन की इकानामी बनायें। आत्मनिर्भर भारत बनाएं। इसके लिए हमें इंडस्ट्री और एग्रीकल्चर में प्रगति करनी होगी। इसके लिए यातायात का इंफ्रास्ट्रक्चर हमें बेहतर करना होगा। इस क्षेत्र में जब कैपिटल इन्वेस्टमेंट आएगा तो रोजगार निर्मित होगा और गरीबी दूर होगी और हिंदुस्तान आत्मनिर्भर होगा। इस सपने को पूर्ण करने में आपके गुणवत्तापूर्ण काम का महत्वपूर्ण योगदान होगा, इसके लिए देश-विदेश में रिसर्च को अपनाना होगा। ज्ञान को संपत्ति में बदलना ही भविष्य हैं।

श्री गडकरी ने अधिवेशन में शामिल हो रहे इंजीनियर्स से कहा कि जनता का पैसा जितना बचा सकते हैं बचाएं, इसमें तकनीक बहुत काम आयेगी। छत्तीसगढ़ में एक महत्वपूर्ण बात शुरू हुई है। हमने यहां से एक बैम्बू क्रैश बैरियर बनाना आरंभ किया। स्टील यूज करने की जरूरत नहीं, यह इको फ्रेंडली है। आप पूरे छत्तीसगढ़ में लोहे के बजाय बैम्बू क्रैश बैरियर यूज करें, इससे गांव के किसानों को बैम्बू के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। हमने पराली से बायो विटामिन बनाया है और इसका मेघालय में प्रयोग हो रहा है। अभी पानीपत में हमने पराली में एक हजार लीटर बायो विटामिन और बायो एविएशन फ्यूल बनाना शुरू किया। यह पराली अथवा पैरा से बनेगा तो छत्तीसगढ़ में बहुत बढ़िया काम हो जाएगा। श्री गडकरी ने कहा कि रोड एक्सीडेंट को कम करने हमें बहुत प्रयास करना होगा। कोशिश करिये एक्सीडेंट न हों। इसके लिए सभी तकनीकी उपाय अपनाएं। छोटी-छोटी बातों को अमल में लाकर रोड इंजीनियरिंग में सुधार करें तो बहुत बेहतर होगा। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि रोड सेफ्टी के हिसाब से परफेक्ट रोड बनाइये। रोड सेफ्टी को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने अधिवेशन के उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हमें विकास भी करना है और पर्यावरण का संतुलन भी रखना है। हमारे देश में ट्रांसपोर्ट सेक्टर देश के पाल्यूशन में 40 प्रतिशत योगदान करता है। मैं आईआरसी के पदाधिकारियों से अनुरोध करूंगा कि आप इस सेक्टर को इंटीग्रेटेड एप्रोच से सोचें। हमें सड़कों के किनारे टायलेट बनाने होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि 01 नवम्बर को हम लोगों ने राज्य स्थापना का 24वां वर्ष पूरा किया है और अब रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वर्ष 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का लक्ष्य रखा है। इसके अनुरूप छत्तीसगढ़ राज्य विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। छत्तीसगढ़ ने अपना विजन डाक्यूमेंट तैयार कर लिया है, इसके मुताबिक हम बहुत रणनीतिक और सुव्यवस्थित तरीके से अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में छत्तीसगढ़ में इस 83वें इंडियन रोड्स कांग्रेस के आयोजन से हम उत्साहित हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2028 तक हमने छत्तीसगढ़ की जीएसडीपी को दोगुना करते हुए 10 लाख करोड़ रुपए करने का निश्चय किया है। छत्तीसगढ़ में मजबूत अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए सड़कें हमारी सबसे बड़ी ताकत होंगी, राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों में परिवहन के अन्य साधनों की तुलना में सड़कों का विस्तार कहीं ज्यादा सुविधापूर्ण हैं।

भारतीय सड़क कांग्रेस के शुभारंभ कार्यक्रम को केन्द्रीय सड़क परिहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के महानिदेशक श्री डी. सारंगी, छत्तीसगढ़ शासन में लोक निर्माण विभाग के सचिव डॉ. कमलप्रीत सिंह, भारतीय सड़क कांग्रेस के अध्यक्ष श्री के.के. पिपरी और महासचिव श्री एस. के. निर्मल ने भी सम्बोधित किया। उद्घाटन सत्र में आज सड़क निर्माण और सड़क सुरक्षा से संबंधित भारतीय सड़क कांग्रेस द्वारा तैयार तीन गाइडलाइन्स और एक मेन्यूअल भी जारी किया गया। अतिथियों ने कार्यक्रम में भारतीय सड़क कांग्रेस की स्मारिका का भी विमोचन किया।

इंडियन रोड कांग्रेस की मेजबानी का सौभाग्य छत्तीसगढ़ को प्राप्त हुआ

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि हमारे लिए यह बहुत ही खुशी की बात है कि इंडियन रोड कांग्रेस के 83वें अधिवेशन की मेजबानी का सौभाग्य छत्तीसगढ़ को प्राप्त हुआ है। केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी जी को इस कार्यक्रम में अपने बीच पाकर हमारी खुशी दोगुनी हो गई है। भारत के विकसित राज्यों में अपना स्थान बनाने की ललक के साथ छत्तीसगढ़ बहुत तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि नितिन गडकरी जी का सहयोग और प्रोत्साहन हम लोगों को निरंतर मिल रहा है। हाल ही में छत्तीसगढ़ के लिए उन्होंने 11 हजार करोड़ रुपए की अत्यंत महत्वपूर्ण सड़क परियोजनाएं स्वीकृत की हैं। इसके लिए मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूं।

अलग राज्य बनने के बाद छत्तीसगढ़ ने हर क्षेत्र में तेजी से विकास किया

उप मुख्यमंत्री तथा लोक निर्माण मंत्री श्री अरूण साव ने अपने सम्बोधन में कहा कि छत्तीसगढ़ पर प्रकृति की असीम कृपा है। यहां बड़ी-बड़ी नदियों, पहाड़ और जंगल के साथ ही कोयले से लेकर हीरे तक के भण्डार हैं। छत्तीसगढ़ कई संतों और महात्माओं की तपो स्थली और कर्मभूमि रहा है। उन्होंने कहा कि अलग राज्य बनने के बाद छत्तीसगढ़ ने हर क्षेत्र में तेजी से विकास किया है। केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी के सहयोग से छत्तीसगढ़ में सड़कों का जाल बिछ रहा है। श्री साव ने उम्मीद जताई कि भारतीय सड़क कांग्रेस के इस 83वें अधिवेशन में देशभर के विशेषज्ञ सड़क निर्माण और सड़क सुरक्षा को लेकर देश और दुनिया में हो रहे अनुसंधान, नवाचार, नई मशीनरी और नई तकनीकों के बारे में मंथन कर इस क्षेत्र की समस्याओं का हल निकालने में सार्थक पहल करेंगे।

केन्द्रीय सड़क परिवहन राज्य मंत्री श्री अजय टम्टा ने अधिवेशन के शुभारंभ कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत में हिमालय से लेकर समुद्र तक सड़कों का जाल बिछ रहा है। हम सब 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य लेकर काम कर रहे हैं।

संक्षिप्त समाचार

अगले दो महीनों में देश के तीन बड़े शहरों के लिए शुरू होगी फ्लाइट

रायपुर (आरएनएस)। अगले दो महीनों में ही रायपुर से पटना, जयपुर और सूरत की फ्लाइट शुरू होना तय हो गया है। विमानन कंपनी के अधिकारियों ने इन रूटों के लिए सर्वे का काम भी पूरा कर लिया है। अधिकारियों का कहना है कि अब फ्लाइटों की टाइमिंग तय की जा रही है। दिसंबर आखिरी में जनवरी पहले सप्ताह में इन शहरों के लिए रायपुर से फ्लाइट शुरू हो सकती है। वहीं दूसरी ओर 12 नवंबर से विस्तार एयरलाइंस की फ्लाइट बंद होकर एयर इंडिया इंडिया हो जाएगी। इस प्रकार विस्तारा एयरलाइंस 11 नवंबर को अपनी आखिरी उड़ान भरेगी। काफी समय से रायपुर से जयपुर व पटना के लिए फ्लाइट शुरू करने की मांग की जा रही है।

टेंट हाउस गोदाम में लगी भीषण आग

रायपुर (आरएनएस)। रायपुर के फफड़ीह स्थित एक गोदाम में बीती रात लगी भीषण आग से अफरातफरी मच गई थी। आग की विभीषिका का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आग बुझाने के लिए एक-दो नहीं बल्कि पूरी 15 गाड़ियां लग गई, तब कहीं जाकर आग पर काबू पाया जा सका। रायपुर के देवेंद्र नगर थाना क्षेत्र की है। जानकारी के मुताबिक, यह पूरा मामला गुरुवार की रात साढ़े 12 बजे का है।

नोटबंदी भारतीय अर्थव्यवस्था का काला दिन : कमलनाथ

भोपाल (आरएनएस)। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने आठ साल पहले आज ही के दिन नौ नवंबर 2016 को लागू की गई नोटबंदी का जिक्र करते हुए कहा कि नोटबंदी ने देश की अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी थी। इतिहास में इसका उल्लेख भारतीय अर्थव्यवस्था के काले दिन के रूप में हमेशा होता रहेगा।

बलौदाबाजार में बीएड महाविद्यालय, ट्रांसपोर्ट नगर की होगी स्थापना : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

मुख्यमंत्री ने 60 करोड़ 20 लाख रूपए की लागत के अनेक विकास कार्यों का किया भूमिपूजन-लोकार्पण

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज बलौदाबाजार के दशहरा मैदान में विभिन्न विकास कार्यों का भूमि पूजन और लोकार्पण करते हुए बलौदाबाजार में बीएड महाविद्यालय प्रारंभ करने और ट्रांसपोर्ट नगर बनाने की घोषणा की। उन्होंने कार्यक्रम में बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के लिए 60 करोड़ 20 लाख रूपए की लागत के अनेक विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। इन कार्यों में से 32 करोड़ 32 लाख रूपए की लागत के 16 विकास कार्यों का भूमिपूजन एवं 27 करोड़ 88 लाख रूपए की लागत के 32 विकास कार्यों का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर राजस्व मंत्री श्री टंकराम वर्मा, उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन, सांसद श्रीमती कमलेश जांगड़े और विधायक गुरू श्री खुशवंत साहेब भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत स्वीकृत मकानों में से 2100 हितग्राहियों को आवास के स्वीकृति पत्र एवं 51 हितग्राहियों को घर की चाबी सौंपी। उन्होंने जिले में संचालित 'हम होंगे कामयाब अभियान' के अंतर्गत 51 युवाओं को सम्मान पत्र प्रदान किया। कार्यक्रम में किसानों ने 3100 रूपए प्रति क्विंटल तथा प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदी के लिए मुख्यमंत्री श्री साय को धान से भरे टुकनी एवं पर्रा भेंट कर उनके प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि बलौदाबाजार संतों, गुरुओं और वीरों की धरा है। अनेक पंथ और आस्था को मानने वाले लोग यहां सौहार्दपूर्वक रहते हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष 2012 में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने इस जिले क़ा निर्माण किया तब से यह जिला विकास के पथ पर अग्रसर है।

कटघोरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को 100 बिस्तर करने की घोषणा

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज कोरबा जिले के कटघोरा विकासखंड मुख्यालय में कलार समाज द्वारा आयोजित भगवान सहस्त्रबाहु जयंती कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि भगवान सहस्त्रबाहु ने धर्मपरायण राज्य की स्थापना कर लोक कल्याणकारी का रास्ता दिखाया, हमारी सरकार भी इन्हीं कल्याणकारी रास्तों पर आगे बढ़ रही है और छत्तीसगढ़ के लोगों के भलाई, सुख समृद्धि के लिए काम कर रही है। मुख्यमंत्री श्री साय ने इस मौके पर कटघोरा में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र को 100 बेड वाले अस्पताल में उन्नयन करने का घोषणा की। उन्होंने कटघोरा अम्बिकापुर राष्ट्रीय राजमार्ग में चकचकवा पहाड़ के पास स्थित चौक को भगवान सहस्त्रबाहु के नाम पर रखने के साथ ही कटघोरा विश्राम गृह के उन्नयन की घोषणा की।

दुनिया की कोई भी ताकत कश्मीर में आर्टिकल 370 की वापसी नहीं करा सकती : पीएम मोदी

धुले (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में अनुच्छेद 370 को लेकर मचे कोहराम पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी पहली प्रतिक्रिया दी। पीएम मोदी ने महाराष्ट्र के धुले में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कांग्रेस-नेशनल कॉन्फ्रेंस पर जोरदार प्रहार किया। उन्होंने कहा कि कश्मीर में केवल बाबा साहेब अंबेडकर का ही संविधान चलेगा। दुनिया की कोई भी ताकत कश्मीर में आर्टिकल 370 की वापसी नहीं करा सकती है।

पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस और इंडी ब्लॉक वालों को जम्मू-कश्मीर में सरकार बनाने का मौका मिला, वो कश्मीर को लेकर फिर से नई साजिशें करने लगे हैं। दो- तीन दिन पहले आपने टीवी में देखा होगा कि जम्मू-कश्मीर विधानसभा में क्या कुछ हुआ। कांग्रेस-एनसी गठबंधन ने वहां फिर से आर्टिकल 370 लागू करने का प्रस्ताव पारित किया है। क्या ये देश स्वीकार करेगा। कश्मीर को तोड़ने का कांग्रेस का ये कारनामा आपको मंजूर है।

पीएम मोदी ने आगे कहा कि आर्टिकल 370 के समर्थन में जम्मू-कश्मीर विधानसभा में बैनर लहराए गए। जब भाजपा के विधायकों ने जी जान से उसका विरोध किया, उन्हें उठा-उठाकर के सदन के बाहर फेंक दिया गया। कांग्रेस और उनके सहयोगी की ये घिनौनी सच्चाई पूरे देश और महाराष्ट्र को समझनी होगी। कांग्रेस-एनसी गठबंधन एक तरफ जम्मू-कश्मीर से भारत के संविधान हटाने का प्रस्ताव पास करता है। कांग्रेस जम्मू-कश्मीर में बाबा साहेब का संविधान नहीं चाहती है। कांग्रेस गठबंधन महाराष्ट्र में आकर संविधान की झूठी किताब लहराती है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कांग्रेस और महाविकास अघाड़ी वालों से कहना चाहता हूं कि पाकिस्तान के एजेंडे को देश में बढ़ावा देने की कोशिश मत करो। कश्मीर को लेकर अलगावादियों की भाषा मत बोलो। याद रखो तुम्हारे मंसूबे कामयाब नहीं होंगे और जब तक मोदी पर जनता जर्नादन का आशीर्वाद है, कांग्रेस वाले कश्मीर में कुछ नहीं कर पाएंगे। कश्मीर पर केवल बाबा साहेब अंबेडकर का ही संविधान चलेगा। ये मोदी का फैसला है, दुनिया की कोई भी ताकत कश्मीर में आर्टिकल 370 की वापसी नहीं करा सकती है।

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का अल्पसंख्यक दर्जा बरकरार रहेगा

नई दिल्ली (आरएनएस)। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) के अल्पसंख्यक दर्जा को लेकर सुप्रीम कोर्ट शुक्रवार को अपना ऐतिहासिक फैसला सुना दिया है। भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) डी.वाई. चंद्रचूड़ ने कहा की अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का अल्पसंख्यक दर्जा बरकरार रहेगा।

सुप्रीम कोर्ट की सात जजों की बेंच अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के अल्पसंख्यक दर्जे पर फैसला सुनाया है । सीजेआई ,जस्टिस संजीव खन्ना, जेडी पारदीवाला और मनोज मिश्रा ने एक मत फैसला लिया है। जबकि जस्टिस सूर्यकांत, दीपांकर दत्ता और सतीश चंद्र शर्मा ने असहमति वाला फैसला सुनाया। सुप्रीम कोर्ट की 7 जजों की बेंच ने 4.3 के बहुमत से फैसला सुनाया कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एएमयू) भारत के संविधान के अनुच्छेद 30 के तहत अल्पसंख्यक दर्जे की हकदार है। सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ इलाहाबाद हाई कोर्ट के 2006 के एक फैसले के संबंध में सुनवाई कर रही थी। हाई कोर्ट के आदेश में कहा गया था कि एएमयू अल्पसंख्यक संस्थान नहीं है।

साल 2019 में सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों की पीठ ने इस मामले को सात जजों की पीठ को सौंप दिया था। सात जजों की संविधान पीठ ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को भारत के संविधान के अनुच्छेद 30 के तहत अल्पसंख्यक का दर्जा दिए जाने के संबंध में दायर की गई याचिकाओं पर सुनवाई की और बाद में फैसला सुरक्षित रख लिया था। कोर्ट ने इस मामले की आठ दिनों तक सुनवाई की थी।

रायपुर दक्षिण उपचुनाव में बीजेपी ने झोंकी पूरी ताकत

सुनील सोनी के समर्थन में सांसद बृजमोहन समेत चार मंत्री और एक दर्जन से ज्यादा विधायक उतरे

सांसद बृजमोहन ने किया रोड शो, सामाजिक समीकरणों को साधने में जुटे मंत्री और विधायक

छोटी बड़ी बैठकें लेकर जनता से किया सीधा संवाद

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर दक्षिण उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। शुक्रवार को सांसद बृजमोहन अग्रवाल समेत करीब चार मंत्री और एक दर्जन से अधिक विधायकों ने भाजपा प्रत्याशी श्री सुनील सोनी के पक्ष में माहौल बनाने के लिए जोरदार अभियान चलाया। रोड शो, जनसंपर्क और छोटी-बड़ी बैठकों के माध्यम से पार्टी नेताओं ने क्षेत्र के मतदाताओं तक पहुंचकर सुनील सोनी के लिए समर्थन जुटाया।

रायपुर दक्षिण उपचुनाव में भाजपा सुनियोजित और मजबूत प्रचार अभियान चला जनता को अपने पक्ष में करने को प्रयासरत है। इसी के तहत सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने एक बार फिर रोड शो कर रायपुर ग्रामीण विधायक श्री मोतीलाल साहू के साथ क्षेत्र में भाजपा के पक्ष में माहौल बनाया। इस दौरान मतदाताओं को भाजपा सरकार की विकास योजनाओं और उपलब्धियों के बारे में बताया गया और सुनील सोनी को एक सक्षम और जिम्मेदार उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत उन्हें जिताने की अपील की। रोड शो में उमड़ी महिलाओं-युवाओं की भीड़ और जनता का उत्साह देखकर भाजपा कार्यकर्ताओं का मनोबल और भी ऊंचा हुआ है। आज के रोड शो की शुरुवात लाखे नगर चौक से हुई कई किलोमीटर लंबा यह शो टिकरापारा पहुंचा जहां इसका समापन हुआ।

रायपुर दक्षिण में कमल खिलाने के लिए भाजपा के चार मंत्री सहित एक दर्जन से अधिक विधायक विभिन्न मंडल व वार्डो में जनता से मिलकर सुनील सोनी को दिखाने की अपील कर रहे हैं। इनमे मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल, मंत्री श्री टंक राम वर्मा, मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, मंत्री श्री लखन देवांगन, विधायक श्री अजय चंद्राकर, श्री मोतीलाल साहू, श्री पुरंदर मिश्रा श्री सुशांत शुक्ला, श्री अनुज शर्मा, श्री गुरु खुशवंत साहेब, श्री गजेन्द्र यादव, श्री ललित चंद्राकर, श्री इंद्र कुमार साहू, श्री रोहित साहू, श्री पुन्नू लाल मोहले, श्री अमर अग्रवाल, श्री राजेश मूणत, श्री योगेश्वर राजू सिन्हा, श्री धरम लाल कौशिक ने पूरे क्षेत्र में जोर-शोर से जनसंपर्क अभियान चलाया। इस दौरान एक दर्जन से ज्यादा विधायकगण छोटी बड़ी बैठकें लेकर सामाजिक समीकरणों को साधने का प्रयास किया गया।

नेताओं ने क्षेत्र में घर-घर जाकर लोगों से मुलाकात की और उन्हें भाजपा की नीतियों एवं विकास के प्रति प्रतिबद्धता के बारे में बताया। इस दौरान क्षेत्र के विकास, रोजगार, सुरक्षा और बुनियादी सुविधाओं जैसे मुद्दों पर चर्चा की गई।

भाजपा का यह अभियान पार्टी के वरिष्ठ नेताओं और कार्यकर्ताओं के उत्साह को प्रदर्शित करता है। भाजपा के उम्मीदवार श्री सुनील सोनी ने इस समर्थन और क्षेत्रीय जनता के उत्साह पर आभार व्यक्त करते हुए कहा कि रायपुर दक्षिण की जनता का विश्वास और समर्थन उनकी सबसे बड़ी ताकत है, और वे इसे बनाए रखने के लिए पूरी निष्ठा के साथ काम करेंगे। रायपुर दक्षिण उपचुनाव में भाजपा की यह आक्रामक रणनीति पार्टी की मजबूत स्थिति और विजय की प्रबल संभावनाओं को उजागर करती है।

दैनिक
विश्व परिवार

रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार

रायपुर, शनिवार 09 नवम्बर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

सीएम विष्णुदेव साय पहली बार बलौदाबाजार पहुंचे, हेलीपैड पर हुआ आत्मीय स्वागत

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिला मुख्यालय बलौदाबाजार के ऐतिहासिक दशहरा मैदान में आयोजित दीपावली मिलन एवं लोकार्पण शिलान्यास समारोह में पहुँचे मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का स्थानीय हैलीपैड में आत्मीय स्वागत किया गया। हैलीपेड में कैबिनेट मंत्री टंक राम वर्मा, जांजगीर चांपा सांसद कमलेश जांगड़े, पूर्व विधायक बिलाईगढ़ सनम जांगड़े, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष चितावर जायसवाल सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि गण कलेक्टर दीपक सोनी, पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल सहित जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का आत्मीय स्वागत किया। इस दौरान कैबिनेट मंत्री लखन लाल देवांगन, आरंग विधायक खुशवंत साहेब भी उपस्थित रहे।

भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ ने सोनी को प्रचण्ड बहुमत से विजई बनाने व्यापारियों से किया जनसंपर्क

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी व्यापार प्रकोष्ठ द्वारा आज दक्षिण विधानसभा प्रत्याशी सुनील सोनी के समर्थन में सदर बाजार, सिटी कोतवाली होते हुए मालवीय रोड में व्यापारियों से सघन जनसंपर्क कर श्री सोनी को प्रचण्ड बहुमत से विजई बनाने की अपील की, उक्त जानकारी देते हुए प्रदेश मीडिया प्रभारी राजकुमार राठी ने बताया कि प्रकोष्ठ के संयोजक लाभचंद बाफना एवं पूर्व विधायक श्रीचंद सुंदरानी के नेतृत्व में प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों ने सदर बाजार से जनसंपर्क प्रारंभ कर सिटी कोतवाली होते हुए मालवीय रोड के व्यापारियों से श्री सोनी के पक्ष में मतदान करने की अपील करते हुए कहा कि श्री सोनी व्यापारी समाज के प्रतिनिधि है एवं भाजपा ने व्यापारी समाज के प्रतिनिधि को रायपुर दक्षिण से प्रत्याशी बनाकर व्यापारी समाज के सम्मान को बढ़ाया है एवं भाजपा हमेशा से ही व्यापारी समाज के हितों की रक्षा करते आई है। जनसंपर्क के दौरान प्रमुख रूप से सुभाष अग्रवाल, राजकुमार राठी, संतोष जैन, नितेश दुबे, महावीर चोपड़ा, जितेंद्र गोलछा, मोहन नेभानी, वीरेंद्र थानवी, सुब्रत घोष, अतुल जैन, अशोक सांखला, रूपेश डागा सहित अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

जिले के विद्यार्थी रिसर्च और साइंस में बढ़ सकते हैं आगे : कलेक्टर रोहित व्यास

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। विधायक श्रीमती रायमुनि भगत ने शुक्रवार कों संकल्प शिक्षण संस्थान जशपुर से अन्वेषण कार्यक्रम का शुभारंभ किया है। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में यह जिला प्रशासन की अभिनव पहल है। जिसके अन्तर्गत कलेक्टर रोहित व्यास के द्वारा जिले के विद्यार्थियों को अंतरिक्ष विज्ञान को लेकर जागरूक और शिक्षित करने के लिए ''अन्वेषण'' के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन कराया जा रहा है।

कलेक्टर रोहित व्यास ने कहा कि स्पेस साइंस में करियर की अपार संभावनाएं हैं। देश की स्पेस एजेंसी इसरो लगातार सफलता के नए आयाम गढ़ रही है। वे चाहते हैं कि जिले के विद्यार्थियों को इस क्षेत्र में भी एक्स्पोज़र मिले। उनमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बेहतर जानने की उत्सुकता बढ़े और जशपुर से भी ऐसी प्रतिभाएं निकलें जो स्पेस साइंस के क्षेत्र में भारत को विश्व में पहले नंबर पर लाने में अपनी भूमिका निभाएं।

विद्यार्थियों को अंतरिक्ष ज्ञान और अनुसंधान के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है। अन्वेषण कार्यक्रम के अन्तर्गत 07 नवम्बर से अंतरिक्ष विज्ञान की प्रारंभिक जानकारी के साथ ही चंद्रमा, शनि व वृहस्पति ग्रह के खगोलीय दूरबीन से अवलोकन करने के कार्यक्रम की शुरूवात संकल्प शिक्षण संस्थान जशपुर से की गई। अन्वेषण के तहत स्टार गेजिंग व खगोल विज्ञान से संबंधित मूलभूत आवश्यक जानकारी जिले के आठो विकासखण्ड मुख्यालय के विद्यालयों के विद्यार्थियों को दी जायेगी। ''अन्वेषण'' के तहत ही दूसरा महत्वपूर्ण कार्यक्रम ''अन्तरिक्ष ज्ञान अभियान'' की शुरूवात 18 नवम्बर से होगी। जिले के 45 हायर सेकेण्डरी विद्यालयों के लगभग 12 हजार से अधिक विद्यार्थी ''अन्तरिक्ष ज्ञान अभियान'' का लाभ ले सकेंगे। ''अंतरिक्ष ज्ञान अभियान'' के तहत विशेष रूप से तैयार तथा विभिन्न उपकरणों एवं मॉडल से सुसज्जित चलित वैन विशेषज्ञों की टीम के साथ सभी विद्यालय में भ्रमण करेंगे और विद्यार्थियों को अन्तरिक्ष ज्ञान से शिक्षित करेंगे। शुभारंभ कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के प्रभारी अधिकारी विश्वासराव मस्के, जिला शिक्षा अधिकारी प्रमोद भटनागर, संकल्प प्राचार्य विनोद गुप्ता, यशस्वी जशपुर के संजीव शर्मा, अवनीश पांडेय सहित संकल्प के? सभी शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

व्यय प्रेक्षक श्रीमती कनुप्रिया दमोर ने प्रत्याशियों के खर्चे का किया निरीक्षण

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण विधानसभा निर्वाचन के लिए नियुक्त व्यय प्रेक्षक श्रीमती कनुप्रिया दमोर ने प्रत्याशियों के खर्चों का निरीक्षण किया। उन्होंने सभी प्रत्याशियों के रैली तथा अन्य कार्यक्रमों के खर्चों की जानकारी ली। श्रीमती कनुप्रिया दमोर ने सोशल मीडिया में किए जा रहे प्रचार का अवलोकन किया। उन्होंने प्रत्याशियों को निश्चित समय में खर्चों की जानकारी निर्वाचन आयोग की व्यय शाखा को देने के निर्देश दिए। इस अवसर पर संबंधित अधिकारीगण उपस्थित थे।

राज निवास दिल्ली में छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस के अवसर पर लोकरंजनी रायपुर की सांस्कृतिक प्रस्तुति आज

दिल्ली/रायपुर (विश्व परिवार)। संस्कृति विभाग छत्तीसगढ़ शासन के सहयोग से राज निवास गवर्नर हाउस कन्वेंशन सेंटर दिल्ली में दिनांक 9 नवंबर 2024 को आयोजित छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर लोकरंजनी लोककला सांस्कृतिक मंच रायपुर की शानदार प्रस्तुति होने जा रही है। संस्कृति विभाग छत्तीसगढ़ शासन के संचालक श्री विवेक आचार्य जी के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम के नोडल अधिकारी श्री युगल तिवारी जी ने बताया कि छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस राज निवास में दिल्ली के एलजी श्री विनय कुमार सक्सेना एवं श्रीमती संगीता सक्सेना के सानिध्य में गवर्नर हाउस दिल्ली में आयोजित सांस्कृतिक संध्या में हाई टी में आमंत्रित डॉक्टर पुरुषोत्तम चंद्राकर कृत लोकरंजनी लोक कला सांस्कृतिक मंच की सुंदर मनोहारी प्रस्तुति प्रदर्शित की जाएगी।

कार्यक्रम में देश भर के सभी राज्यों के कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के वरिष्ठ लोक कलाकार डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर द्वारा लोकरंजनी के माध्यम से करमा गीत - नृत्य के साथ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी जाएगी।

इस अवसर लोकरंजनी के संचालक डॉ. पुरुषोत्तम चंद्राकर वरिष्ठ लोक कलाकार, कलाकार रोहित कुमार साहू, मन्नू लाल वर्मा, बाहरू यादव, संध्या पडौती, ज्योति बंजारे, अनिल कुमार निषाद, ज्योति शर्मा, रामकृष्ण यादव, सती धिवर, ममता यादव, एवं कलाकारों द्वारा बहुत सुंदर प्रस्तुति दी जाएगी।

एआईआईएमएस रायपुर की साइटोजेनेटिक्स लैब में दुर्लभ वुल्फ-हिर्शहॉर्न सिंड्रोम का निदान

रायपुर (विश्व परिवार)। एआईआईएमएस रायपुर ने दुर्लभ आनुवांशिक विकार, वुल्फ-हिर्शहॉर्न सिंड्रोम का सफलतापूर्वक निदान किया है, जो लगभग 50, 000 में से 1 व्यक्ति को प्रभावित करता है। यह उपलब्धि साइटोजेनेटिक्स सेवाओं की विशेषज्ञता से संभव हुई, जिसका नेतृत्व प्रोफेसर डॉ. मनीषा बी. सिन्हा कर रही हैं।

उत्तर प्रदेश के एक बच्चे को बाल रोग इकाई में भर्ती किया गया था, जहाँ उनका इलाज प्रोफेसर डॉ. तुषार बी. जगजापे की देखरेख में हुआ। बच्चे में कमजोर विकास और विकासात्मक विलंब जैसे चिंताजनक लक्षण देखे गए। बच्चे में माइक्रोसिफेली, चपटा नासिका पुल, नीचे की ओर झुके हुए कान और अन्य विशिष्ट चेहरे की विशेषताएं देखी गईं। इसके अलावा, एक इकोकार्डियोग्राम से एट्रियल सेप्टल डिफेक्ट और पेटेंट डक्टस आर्टेरियोसस का भी पता चला। गहन कैरियोटाइप विश्लेषण के माध्यम से वुल्फ-हिर्शहॉर्न सिंड्रोम का निदान किया गया। बाल रोग की अतिरिक्त प्रोफेसर, डॉ. त्रिप्ती सिंह ने बताया कि इस स्थिति का उपचार अत्यंत व्यक्तिगत होता है और प्रत्येक मरीज के विशेष लक्षणों के अनुसार किया जाता है। साइटोजेनेटिक्स लैब में, प्रो. डॉ. सिन्हा ने लगभग 140 मरीजों का परीक्षण किया है और डाउन सिंड्रोम, टर्नर सिंड्रोम और बैलेंस्ड ट्रांसलोकेशन्स सहित विभिन्न स्थितियों का निदान किया है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./15465/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 06-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15465
वार्ड का नाम- 54 - कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 54 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR652N0495D जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती RISHI RAJ PANDEY पिता/पति, श्री/श्रीमती RAJKARAN PANDEY के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. TRIPRTI SAHU 2. DUSYANT SAHU पिता/पति, श्री/श्रीमती RAM DAYAL SAHU ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनान्तर्गत सूर्या अपार्टमेंट, कटोरा तालाब, रायपुर में स्थित फ्लैट **क्र.-बी-96, श्री लक्ष्मण दास जादवानी पिता स्व. वरियल दास जादवानी,** के नाम पर इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्रमांक 7955/61 दिनांक 26.10.1995 के माध्यम से आबंटित किया गया है। उक्त फ्लैट का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक **25.11.2010** को सेलडीड पंजीकृत करा लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्री लक्ष्मण दास जादवानी पिता स्व. वरियल दास जादवानी**, की मृत्यु दिनांक 06.10.2023 को हो जाने के कारण उनकी पत्नी **श्रीमती कमला जादवानी पति स्व. लक्ष्मण दास जादवानी** के द्वारा अपने नाम पर नामांतरण करने हेतु निर्धारित आवेदन पत्र, शपथ पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं अन्य दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उपरोक्त फ्लैट को आबंटी **श्री लक्ष्मण दास जादवानी पिता स्व. वरियल दास जादवानी**, की मृत्यु होने के उपरांत उनकी पत्नी **श्रीमती कमला जादवानी पति स्व. लक्ष्मण दास जादवानी** के नाम पर नामांतरण किया जाना है।

अत: उक्त फ्लैट के नामांतरण के संबंध में किसी व्यक्ति, शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के **15 दिवस** के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

मैक में राष्ट्रीय स्काउट गाइड का 75वां स्थापना दिवस मनाया गया

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराजा अग्रसेन इंटरनेशनल कॉलेज समता कॉलोनी, रायपुर में 7 नवंबर 2024 को राष्ट्रीय स्काउट एवं गाइड (रोवर रेंजर) का स्थापना दिवस मनाया गया।

राष्ट्रीय स्काउट एवं गाइड की स्थापना 7 नवंबर 1950 को स्वतंत्र भारत में जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद तथा मंगल दास पकवासा के द्वारा की गई। हर वर्ष राष्ट्रीय स्काउट गाइड स्थापना दिवस मैक महाविद्यालय में रोवर रेंजर, इंचार्ज छात्र-छात्राओं के द्वारा मनाया जाता है। इस कार्यक्रम में मुख्यअतिथि श्री सत्यनारायण शर्मा जी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भारत स्काउट एवं गाइड, श्री राजेश अग्रवाल कार्यकारणी अध्यक्ष, भारत स्काउट एवं गाइड (चेयरमेन मैक कॉलेज), वरिष्ठ पदाधिकारीगण श्री जी. स्वामी जी जिला अध्यक्ष, श्री सुरेश शुक्ला जी जिला मुख्य आयुक्त, श्रीमती सरिता पाण्डेय (मैंक रेंजर लीडर), डॉ एम. एस. मिश्रा (प्राचार्य मैक कॉलेज), सुश्री शिवांगी मिश्रा (एडमिनिस्ट्रेटर, मैक कॉलेज) एवं सभी विभाग के विभागाध्यक्ष उपस्थित थे।

मैक छत्तीसगढ का एकमात्र महाविद्यालय है जहाँ रोवर रेंजर्स सन् 2010 से संचालित है तब से लगातार छात्र-छात्राओं की सहभागिता रहती है। कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना के साथ किया गया। चेयरमेन श्री राजेश अग्रवाल ने मैक रोवर रेंजर छात्र-छात्राओं को पूरे वर्ष के कार्य की सराहना की और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में उनकी आगे की भागीदारी के लिए उनकी टीम को प्रेरित किया एवं छात्र-छात्राओं को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके साथ मैक महाविद्यालय कें रोवर रेंजर, इंचार्ज, छात्र-छात्राओं के द्वारा रायपुर लोकसभा सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल जी के निवास में जाकर स्थापना दिवस मनाया एवं 'झंडा' स्टिकर लगाया गया। श्री बृजमोहन अग्रवाल जी ने छात्र-छात्राओं का मनोबल बढ़ाया एवं स्काउट और गाइड (रोवर रेंजर) का स्थापना दिवस की शुभकामनांए दी।

इस स्थापना दिवस अवसर को रोवर रेंजर के छात्र-छात्राओं द्वारा समारोह में उपस्थित समस्त अतिथियों, विभागाध्यक्ष और समस्त शिक्षकों को 'झंडा' स्टिकर लगाया गया। पूरे कार्यक्रम का समन्वय महाविद्यालय के रोवर रेंजर्स लीडर डॉ. डिग्रीलाल पटेल, श्री अभिजीत चक्रवर्ती, श्री गोपीराम सोनकर, सुश्री नीलिमा निषाद और महाविद्यालय के रोवर रेंजर टीम के सभी छात्रों के मार्गदर्शन में किया गया।

कार्यालय नगर पंचायत समोदा जिला रायपुर (छ.ग.)
Email ID- npsamoda21@gmail.com

क्रमांक / 1117 / लो.नि.वि. / न0पं0 / 2024-25 — समोदा, दिनॉक : 05.11.2024

// मैन्युअल निविदा आमंत्रण सूचना //

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों एवं जी.एस.टी. में पंजीकृत सप्लायरों से निम्नलिखित निर्माण / सामग्री प्रदाय / अन्य कार्यों हेतु मैनुअल निविदा पंजीकृत डाक से त्रिलिफाफा पद्धती के माध्यम से आंमत्रित की जाती है :-

01. आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि :- 20.11.2024 समय दोपहर 3:00 बजे तक
02. निविदा प्रपत्र जारी करने की अंतिम तिथि :- 21.11.2024 कार्यालयीन समय तक
03. निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि :- 27.11.2024 समय शाम 5:00 बजे तक
04. निविदा खोले जाने की तिथि :- 28.11.2024 समय शाम 5:30 बजे तक

क्र.	कार्य का नाम	अनु. लागत (लाख में)	अमानत राशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने हेतु समयावधि	निविदा प्रपत्र
01.	वार्ड क्रमांक 01 में अटल परिसर निर्माण कार्य।	19.99	15000.00	750.00	02 माह	अ, ब

उपरोक्त सामाग्री प्रदाय / निर्माण कार्य की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी कार्यालयीन अवधि में कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है साथ ही यह जानकारी विभागीय वेबसाईट http://uad.cg.gov.in से भी डाउनलोड की जा सकती है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पंचायत समोदा

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /15641/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 08-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15641
वार्ड का नाम- 1 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 1 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR801N00386 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती VIJAY BAHADUR पिता/पति, श्री/श्रीमती B.R. SINGH के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. NIBHA KUMARI W/O DHARMENDRA KUMAR 2. DHARMENDRA KUMAR S/O JANARDHAN SINGH पिता/पति, श्री/श्रीमती .... ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /15631/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 08-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15631
वार्ड का नाम- 1 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 1 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR801L00231 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती POONAM THAKUR पिता/पति, श्री/श्रीमती SHUSHIL KUMAR THAKUR के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती JYOTI KAUR पिता/पति, श्री/श्रीमती JAGTAR SINGH ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /15639/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 08-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15639
वार्ड का नाम- 2 - पं. जवाहर लाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 2 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR802H00977 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती RAJESH MAKHIJA पिता/पति, श्री/श्रीमती LT. KAJURAM MAKHIJA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती AXAT DIXIT पिता/पति, श्री/श्रीमती DWARIKA PRASAD DIXIT ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/ आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com

पत्र क्र./15626/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2024
रायपुर, दिनांक 08-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15626
वार्ड का नाम-34- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड-34 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR333A00527 जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SHIVRAT PRASAD TIWARI पिता/पति श्री/श्रीमती S/O PILA RAM TIWARI के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्री ईश्वरी प्रसाद तिवारी 2. श्रीमती सुशीला शर्मा 3. कु. देवकी तिवारी 4. श्रीमती जानकी तिवारी** पिता/पति श्री/श्रीमती **सभी के पिता- स्व. श्री शिवरात प्रसाद तिवारी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./15247/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 06-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15247
वार्ड का नाम- 52 - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 52 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR446K00398 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती BHUSHAN FAGWANI पिता/पति, श्री/श्रीमती LT. LALCHAND FAGWANI के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. DHANESHWAR KUMAR CHAURASIYA 2. DHANANJAY CHAURASIYA पिता/पति, श्री/श्रीमती RAMASHRAYA CHAURASIYA ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./15610/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 06-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15610
वार्ड का नाम- 52 - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 52 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR446N00046 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती MS AMISHA IN SKY CREATION DWARA - NAVIN NAGWANI पिता/पति, श्री/श्रीमती HARJAS RAI NAGWANI के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती RASHMI CHORDIA पिता/पति, श्री/श्रीमती ANKUR CHORDIA ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./15577/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 06-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15577
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR446C00132 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती SAPNA MOTWANI, KISHORE MOTWANI पिता/पति, श्री/श्रीमती KISHORE MOTWANI, LT. MOHAN LAL MOTWANI के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती HEENA KHAN पिता/पति, श्री/श्रीमती HAMID KHAN ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./15467/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 04-11-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15467
वार्ड का नाम- 53 - बाबू जगजीवनराम वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 53 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR446NA0021 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती GULAB DEVI SHARMA पिता/पति, श्री/श्रीमती LATE. RAMSWARUP SHARMA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती SAROJ KUMAR MISHRA पिता/पति, श्री/श्रीमती R.P. MISHRA ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, शनिवार 09 नवंबर 2024

नियम विरूद्ध मार्गो में संचालित वाहनों के विरूद्ध की गयी सख्त कार्यवाही

जागरूकता हेतु परिवहन विभाग ने की कवायद

कोरबा(विश्व परिवार)। राज्य शासन द्वारा आम जनता को बेहतर यातायात एवं परिवहन के साधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से राज्य के विभिन्न मार्गों में साधारण श्रेणी से लेकर वातानुकूलित शयन श्रेणी के निजी यात्री वाहन संचालित है, जो आम जनता व यात्रियों को उनके निर्धारित गंतव्य तक प्रतिदिन पहुंचाने का काम करती है। राज्य शासन द्वारा इन्हीं संचालित निजी यात्री वाहनों में सफर करने वाले ऐसे व्यक्ति जो दृष्टिहीन, बौद्रिक दिव्यांग व्यक्ति, दिव्यांग व्यक्ति जो दोनों पैरों से चलने में असमर्थ है, वरिष्ठ नागरिक जिनकी उम्र 80 साल या उससे अधिक है, एचआई.व्ही. एड्स से पीड़ित व्यक्ति को यात्री किराये में 100 प्रतिशत छूट दी गई है। समाज की मुख्यधारा से जोडने के उद्देश्य से नक्सलवाद से प्रभावित व्यक्ति का प्रमाण पत्र रखने वाले व्यक्ति को यात्री बस में सफर करने पर किराये में 50 प्रतिशत की रियायत छूट दिये जाने हेतु

अधिसूचित गया है। त्यौहारी सीजन को ध्यान में रखते हुए यह संभव है कि आम जनता द्वारा अपने गंतव्य में जाने हेतु अधिक आवाजाही होगी, जिसके फलस्वरूप यात्रियों से वाहन संचालकों द्वारा अवैध वसूली कर अधिक किराया दर वसूल किया जा सकता है। इस तथ्य की दृष्टि से राज्य के परिवहन अधिकारियों को अधिक किराया वसूली की शिकायतों पर तत्काल संज्ञान लेने एवं ऐसे यात्री वाहनों के विरूद्ध नियमानुसार वैधानिक कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये हैं। परिवहन अधिकारियों को आम जनता को दृष्टिगोचर रूप से अपने गंतव्य के लिए निर्धारित किराये दर की जानकारी हो, इस बाबत यात्री बसों में किराया सूची चस्पा हो यह सुनिश्चित किये जाने के निर्देश दिये गये हैं। विभागीय प्रवर्तन अमले द्वारा निर्देशों के अनुपालन के तहत यात्री वाहनों की जांच करते हुए निर्धारित किराये की राशि से अधिक किराया वसूल करते पाये गये वाहन एवं बिना किराया दर सूची चस्पा किये संचालित होते पाए 349 यात्री वाहनों में चालानी कार्यवाही कर कुल 4,47,800/- रूपए समन शुल्क वसूल किया गया। यात्रा के दौरान वाहन संचालन द्वारा किराये में छूट नहीं दी जाती है, या किसी प्रकार का अभद्र दुर्व्यवहार या अवैध किराया दर वसूल किया जाता है तो इसकी शिकायत यदि कोई साक्ष्य या तथ्य भी हो तो संबंधित जिले के परिवहन अधिकारी से किया जाए। विभाग द्वारा परिवहन अधिकारी एवं प्रवर्तन अमले को ऐसी शिकातयों को त्वरित गंभीरता से लेने व इस दिशा में निरंतर चेकिंग कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये है।

हाईकोर्ट ने अवैध रेत उत्खनन पर जताई कड़ी नाराजगी

बिलासपुर(विश्व परिवार)। हाईकोर्ट ने बिलासपुर में अवैध रेत उत्खनन के मामले को गंभीर माना है. कोर्ट ने अरपा नदी में हो रहे अवैध उत्खनन पर कड़ी नाराजगी भी जाहिर की है. रेत के अवैध उत्खनन को लेकर लगी याचिका पर छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा और जस्टिस बीडी गुरु की डबल बैंच में बुधवार को सुनवाई हुई. इस दौरान मुख्य न्यायाधीश ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि कैसे पर्यावरण का संरक्षण हो पाएगा जब पर्यावरण की धज्जियां उड़ाई जा रही है. उन्होंने कहा की विभाग आंखें बंद कर बैठा हुआ है. वहीं इस मामले में खनिज विभाग के सचिव से शपथपत्र में जवाब भी तलब किया है. उन्होंने बेहद स्पष्ट और सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि शपथ पत्र में यह स्पष्ट करें कि अवैध उत्खनन से व्यक्तिगत कार्रवाई और संबंधित व्यक्ति पर जुर्माना की क्या कार्रवाई की गई है? दरअसल, अरपा अर्पण महा अभियान समिति और अन्य याचिका पर लगातार सुनवाई चल रही है. अरपा अर्पण महाअभियान के वकील अंकित पांडे ने 1 जनवरी 2024 से लेकर 7 सितंबर 2024 तक की खबर का कवरिंग मेमो डीबी के सामने पेश किया. वहीं चीफजस्टिस की डबल बेंच ने भी लोखंडी में अवैध उत्खनन की खबर पर संज्ञान लिया. इस मामले में अगली सुनवाई 9 दिसंबर को होगी.

संक्षिप्त समाचार

शासकीय नौकरी लगाने के नाम पर ठगी, गिरफ्तार

जांजगीर-चांपा(विश्व परिवार)। जिले में छत्तीसगढ़ शिक्षाकर्मी एवं प्रयोगशाला सहायक पद पर वर्ष 2019 में नौकरी लगाने के नाम पर सुलोचना बंजारे और कृष्ण कश्यप से 3 लाख रुपए की ठगी के आरोपी शिक्षक मनमोहन सिंह को पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है। बालको नगर कोरबा की रहने वाली सुलोचना बंजारे ने शिकायत दर्ज कराई की छत्तीसगढ़ शिक्षाकर्मी एवं प्रयोगशाला सहायक पद पर वर्ष 2019 में वैकेंसी में फार्म भरी हुई थी। इस बीच रिश्तेदार के माध्यम से मनमोहन सिंह से जान पहचान हुई जोकि पुटपुरा के शासकीय मिडिल स्कूल में शिक्षक के पद पर पदस्थ है। मनमोहन सिंह ने नौकरी के लिए 5 से 6 लाख रुपए लगने की बात कही और अपने घर न्यू चंदनिया पारा जांजगीर बुलाया था इस बीच 14 अक्टूबर 2019 को पति उनके चाचा के साथ पहुंचे हुए थे। मनमोहन ने कहा कि रिजल्ट आने वाला है जल्दी से पैसे दोगे तो लिस्ट में नाम आने की बात कही जिसपर विश्वास में 1.50 लाख रुपए नगदी रकम दिए। वही नेहरू नगर बालको का रहने वाल कृष्णा कश्यप ने भी 1.50 लाख रुपए दिया था। 15 अक्टूबर 2019 को रिजल्ट जारी हुआ जिसमें नंबर कम आने पर नाम नहीं आया था तब ठगी होने का एहसास होने पर पैसे की मांग करने पर टाल मटोल जवाब दिया करता था। सिटी कोतवाली थाने में धारा 420 के तहत मामला दर्ज कर मनमोहन सिंह को पुलिस हिरासत में लेकर पूछताछ करने पर रकम लेने की बात स्वीकार की वही 45 हजार रुपए फोन के माध्यम से लौटने की बात स्वीकार की है। जिसे गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

किशोरी के साथ अश्लील हरकत

कोरबा(विश्व परिवार)। सिविल लाइन पुलिस ने उस आरोपी को गिरफ्तार कर रिमांड पर लिया है जो रिश्ते की नातिन से दुर्व्यवहार कर रहा था। पीडिता अपनी मां के साथ शरण लेने यहां आई थी। मामले की रिपोर्ट सिविल लाइन थाना में की गई जिस पर कार्रवाई की गई। पुलिस ने बताया कि प्रकरण में गिरफ्तार आरोपी मूलत: दुर्ग जिले का रहने वाला है जो यहां कोलफील्ड में कार्यरत है। जानकारी के मुताबिक आरोपी की बेटी को उसके पति द्वारा तिरस्कृत कर दिया गया। जिससे वह अपने पिता के घर पहुंची ताकि बाकी समय यहां गुजारा जा सके। बताया गया कि यहां भी उसके लिए स्थिति अनुकूल नहीं रही। एसईसीएल कर्मी पिता अपनी बेटी से मारपीट करता और अपनी नतीनी यानी बेटी की बेटी के साथ अश्लील हरकत करने लगा। मां को यह बात बर्दाश्त नहीं हुई और उसने सिविल लाइन पुलिस को इस घटना से अवगत कराया। महिला संबंधी अपराध होने पर पुलिस ने इसे गंभीरता से लिया और उच्चाधिकारियों को सूचना देने के साथ अगली कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार किया। प्रकरण में पास्को एक्ट की कार्रवाई की गई है।

नए आयुक्त की प्रतीक्षा है निगम के ठेकेदारों को

कोरबा(विश्व परिवार)। नगर निगम कोरबा के लिए राज्य सरकार ने आशुतोष पांडेय की पदस्थापना आयुक्त के तौर पर कर दी है। उनकी ज्वाइनिंग होना बाकी है। ठेकेदारों को नए आयुक्त के आने का बेसब्री से इंतजार है। स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल के विशेष सहायक के रूप में सेवाएं दे रहे आशुतोष को नगर निगम कोरबा में अगली भूमिका निभाने का जिम्मा सरकार ने दिया है। प्रदेश के बड़े निगम में कोरबा शामिल है। राज्य प्रशासनिक सेवा के अधिकारी पांडेय की प्रतीक्षा निगम के ठेकेदार कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि लंबे समय से यहां काम करने वाले ठेकेदारों के बड़े बिल बकाया है और इससे उनके सामने चुनौतियां बनी हैं।

राज्योत्सव में स्टॉल लगाकर दी गई विधिक जानकारी

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस के अवसर पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर, ऑडीटोरियम घंटाघर कोरबा में जिला प्रशासन द्वारा आयोजित राज्योत्सव कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोरबा के द्वारा चलाये जा रहे विधिक गतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार किये जाने के प्रयोजनार्थ श्री सत्येन्द्र कुमार साहू, प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कोरबा के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में विभागीय स्टॉल लगाया गया। कु. डिम्पल सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा वरिष्ठ नागरिक पैरालीगल वॉलेण्टियर्स श्री पी.एल. सोनी, श्री भीमरावं श्यामकुंवर, श्री रमाकांत दुबे, गोपाल चन्द्रा, उपेन्द्र राठौर एवं अहमद खान की ड्यूटी दिनांक 14 दिसम्बर 2024 को आयोजित होने वाले नेशनल लोक अदालत का नालसा के द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी आमजन को प्रदाय किये जाने हेतु फ्लेक्स का प्रदर्शन स्टॉल में कराया गया।

तब सौ रुपए भी नहीं जोड़ पाती थीं 90 साल की मेंघनीबाई, अब एक हजार पाकर खुश है....

मेंघई बाई के लिए महतारी वंदन की राशि है बहुत काम की

कोरबा(विश्व परिवार)। वैसे तो 90 साल की मेंघई बाई रोज सुबह उठ जाती है...आज भी वह रोज की भांति सुबह से उठ गई थीं.. कुछ माह पहले अपने खेत के मेढ़ पर उन्होंने जो तिल के पौधे लगाए थे...वह बड़ा होकर तोड़ने लायक हो गया था,सो उन्होंने तय किया कि आज उन पौधों को काटकर उसमे से सारा तिल इकट्ठा कर लिया जाए..। सारे पौधे घर लाने के साथ ही घर की डेहरी पर कुछ घण्टो बाद पौधों के तने से वह तिल के एक-एक फलों को अलग कर रही थी...इस बीच बातों की शुरुआत होते ही वह बताती है कि तिल के अनगिनत फलों को इकट्ठा कर बहुत मुश्किल से कुछ किलो ही बीज निकाल पाती हैं.. यह बीज घर में ही लड्डू बनाकर खाने के लिए काम आता है.. इसे बेचने पर कुछ रुपए जरूर मिल जाते..लेकिन अब खाते में एक हजार रुपए हर महीने मिल जाते हैं, इसलिए इसे बेचने की जरूरत नहीं पड़ेगी...यह एक हजार उनके बहुत काम आती है...एक समय था जब वह सौ रुपए भी नहीं जोड़ पाती थीं। करतला विकासखण्ड के अंतर्गत ग्राम कोथारी की रहने वाली नब्बे वर्षीय वृद्धा मेंघनी बाई ने बताया कि उन्होंने बीते दौर में पैसों की अहमियत को भलीभांति समझा है। पैसे, आने, रुपए यह सभी जल्दी से किसी के हाथ में नहीं होते थे। कुछ पैसा जोड़ने के लिए भारी-भरकम मेहनत करनी पड़ती थी। वृद्धा मेंघनी बाई ने बताया कि घर पर वह अपनी दिव्यांग बेटी के साथ निवास करती है और महतारी वदंन योजना से जो एक हजार की राशि मिलती है, उससे ही घर की कई जरूरी सामग्री खरीदती है। अपने जीवन में कई वसंत देख चुकी मेंघनी बाई ने बताया कि वह जैसे-तैसे चल-फिर लेती है। उनके नाम पर राशनकार्ड बना है और इससे खाद्यान्न मिल जाता है। इस उम्र में कुछ काम नहीं कर सकती, ऐसे में एक हजार रुपए हर माह मिलने से उसके लिए यह राशि बहुत काम आती है। उन्होंने छत्तीसगढ़ सरकार द्वाराहर महीने एक हजार रुपए महिलाओं को दिए जाने पर कहा कि यह राशि हम वृद्ध महिलाओं के लिए एक बड़ी राहत की तरह होती है।

बेमेतरा जिले में अधिकारी कर रहे गिरदावरी सत्यापन का कार्य

बेमेतरा(विश्व परिवार)। खरीफ फसल 2024-25 में किसानों द्वारा लगाए धान फसल की वास्तविक गिरदावरी संबंधित पटवारियों के माध्यम से किया। अब छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले में अधिकारियों द्वारा गिरदावरी सत्यापन का कार्य सक्रियता से किया जा रहा है। गिरदावरी कार्य में पारदर्शिता लाने के लिए ही गिरदावरी सत्यापन किया जा रहा है। पटवारियों द्वारा संपादित वास्तविक गिरदावरी कार्यों को शत-प्रतिशत शुद्ध करने के लिए गिरदावरी का सत्यापन के लिए जिले के विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारियों को अधिकृत किया गया है। ताकि किसी प्रकार की त्रुटि की गुंजाइश ना रहे। फसल गिरदावरी व फसल सत्यापन का कार्य जीपीएस आधारित मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से किया जा रहा है। इस कार्य के लिए पहले अधिकारियों-कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया था । इस कार्य में जिले के डिप्टी कलेक्टर से लेकर अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) घनश्याम तंवर, मुकेश गोड़, पिंकी मनहर, और जिला खाद्य अधिकारी गणेश कुर्रे और विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने आज गिरदावरी सत्यापन किया । गिरदावरी सत्यापन की इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य फसल की स्थिति का वास्तविक आकलन करना है।

72 लीटर महुआ शराब एवं 210 किलो ग्राम महुआ लाहन पकड़ाया

रायगढ(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री कार्तिकेया गोयल ने अवैध मदिरा के परिवहन, भंडारण एवं बिक्री पर सख्त कार्यवाही के निर्देश दिए है। उक्त निर्देश के परिपालन में आबकारी विभाग द्वारा कार्यवाही करते हुए 72 लीटर महुआ शराब एवं 210 किलो ग्राम महुआ लाहन जप्त किया। मौके पर मदिरा बनाने के बर्तन बरामद करते हुए अज्ञात आरोपियों के विरूद्ध आबकारी अधिनियम के तहत गैर-जमानतीय धाराओं में प्रकरण कायम किया है। आबकारी विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार अवैध शराब निर्माण की सूचना मिलने पर वृत्त-घरघोड़ा अन्तर्गत ग्राम-बिलासखार थाना पूँजीपथरा, जंगल में कुरकुट नदी किनारे पहुँचे जहां उक्त स्थल पर चार प्लास्टिक डिब्बा में भरी प्रत्येक में 15-15 लीटर कुल 60 लीटर, एक प्लास्टिक बॉटल में 2 लीटर, एक प्लास्टिक पालीथिन में भारी 10 लीटर इस तरह कुल 72 लीटर महुआ शराब एवं 14 प्लास्टिक बोरियों में भरी कुल 210 किलोग्राम महुआ लाहन जप्त किया गया। उक्त कार्यवाही के दौरान आबकारी उपनिरीक्षक संतोष नारंग एवं जितेश नायक, आबकारी आरक्षक तुलेश्वर राठौर, राजेश्वर सिंह ठाकुर, भेखराम पटेल उपस्थित थे।

सभी योजनाओं का शतप्रतिशत हितग्राहियों को दिलाएं लाभ- कलेक्टर

जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति की बैठक का आयोजन

जशपुर(विश्व परिवार)। बुधवार को जिला कार्यालय सभा कक्ष में कलेक्टर रोहित व्यास की अध्यक्षता में जिला स्तरीय परामर्शदात्री समिति की तिमाही बैठक एवं विशेष जिला स्तरीय पुनरीक्षण समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में विभिन्न विभागों के साथ जिले के अग्रणी बैंक एवं अन्य सभी शासकीय तथा निजी बैंकों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। इस अवसर पर कलेक्टर ने सभी हितग्राहीमूलक ऋण योजनाओं का लाभ हितग्राहियों को दिलाने तथा सभी योजनाओं में विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर लक्ष्य अनुरूप शत प्रतिशत लोगों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। उन्होंने बैंकों में आने वाले जिले के सामान्य लोगों से सभी बैंक कर्मियों को सहयोगात्मक एवं सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करने तथा उनकी समस्याओं का त्वरित निराकरण करने को कहा। कलेक्टर ने किसान क्रेडिट कार्ड योजना से प्रत्येक छोटे से छोटे किसान को जोड़ते हुए सभी को योजनान्तर्गत क्रेडिट कार्ड एवं ऋण उपलब्ध कराने को कहा। इसमें राजस्व विभाग के समन्वय से नामांतरण, बटांकन आदि की समस्या का निराकरण कराने के भी निर्देश दिए। उन्होंने स्वसहायता समूहों को दिए गए ऋणों में अदायगी की स्थिति का जायजा लेते हुए एनपीए को नियंत्रित करने को कहा। इसके साथ ही प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, विश्वकर्मा योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, मुद्रा योजना, मत्स्य संपदा योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, स्वनिधि योजना एवं अन्य हितग्राहीमूलक ऋण योजनाओं के अंतर्गत हितग्राहियों के लंबित आवेदनों पर त्वरित कार्यवाही करने को कहा। उन्होंने मत्स्यपालन एवं पशुपालन करने वाले किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड का लाभ लेने में हो रही समस्याओं के निदान हेतु भी निर्देशित किया। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकों की पहुंच बढाने के लिए नवीन बैंक शाखाएं खोलने हेतु बैंकों को प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त जिले के विकास में योगदान हेतु निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत अधोसंरचना निर्माण एवं अन्य विकास कार्यों में सहयोग हेतु निजी एवं शासकीय बैंकों को जिला प्रशासन के साथ मिल कर कार्य हेतु आमंत्रित किया। उन्होंने ग्रामीणों को ऋण जाल में फंसाने वाले लोगों से बचाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार निगरानी करने एवं बैंकों से लोगों को जोड़ने को कहा। उन्होंने शिविरों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को मुद्रा योजना से जोड़ कर लाभ दिलाने तथा उनकी समस्या का निदान कर आवेदन भरवाने के निर्देश दिए। इस बैठक में आरबीआई के एलडीओ मैनेजर सदानंद बास्के, अग्रणी बैंक प्रबंधक वाल्टर बेंगरा सहित सभी बैंकों के प्रतिनिधि एवं पशुपालन, बिहान, मत्स्यपालन, अंत्यावसायी, उद्योग, खादी ग्रामोद्योग, नगरीय निकाय के जिला अधिकारी भी उपस्थित रहे।

अस्पताल सील करने पहुंचे एसडीएम-बीएमओ से भीड़ गए संचालक, गिरफ्तार

बच्चे की मौत के बाद कलेक्टर के निर्देश पर कार्रवाई

मुंगेली(विश्व परिवार)। जिले के लोरमी में बिना लाइसेंस संचालित हो रहे अस्पताल को सील करने पहुंची एसडीएम और बीएमओ की टीम के साथ संचालक और स्टाफ ने जमकर हुज्जतबाजी की। इसके बाद एसडीओपी को बुलाया गया, जिनके साथ भी बहसबाजी की गई। दरअसल लोरमी के बुद्ध केयर हॉस्पिटल में इलाज में लापरवाही के चलते 7 वर्षीय बच्चे की जान चली गई। शिकायत मिलने पर मुंगेली कलेक्टर राहुल देव ने हॉस्पिटल को सील करने के निर्देश दिए। कलेक्टर के आदेश पर अस्पताल को सील करने पहुंचे एसडीम और बीएमओ की टीम से अस्पताल का संचालन करने वाले डॉक्टर भीड़ गए और हुज्जत करने लगे। सूचना पर पहुंची महिला

एसडीओपी से भी डॉक्टर ने बहस की। डॉक्टर को गिरफ्तार कर अस्पताल को सील किया गया है। लोरमी में बुद्ध केयर हॉस्पिटल संचालित है। अस्पताल में फ्लोर में विकासखंड के ग्राम मोहबांधा के आश्रित ग्राम बांधी निवासी 7 वर्षीय बालक धनंजय गोंड को मस्तिष्क ज्वर से पीड़ित होने के चलते भर्ती करवाया गया था। अस्पताल में स्पेशलिस्ट डॉक्टर नहीं होने के बावजूद भी अस्पताल के संचालक डॉक्टर गोकुल बंजारे के द्वारा मस्तिष्क ज्वर का इलाज होने का आश्वासन दे अस्पताल में बच्चे को भर्ती रख ईलाज किया जा रहा था। ईलाज में लापरवाही के चलते बच्चे की मौत हो गई। मामले के संज्ञान में आने पर कलेक्टर राहुल देव ने तो कल टीम गठित कर जांच के निर्देश दिए थे। कलेक्टर के निर्देश पर लोरमी एसडीम अजीत पुजारी, ब्लैक मेडिकल ऑफिसर जीएस दाऊ के साथ राजस्व एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम अस्पताल में जाकर जांच कर रही थी। जांच में पाया गया कि बिना अनुमति के अस्पताल में मरीजों को भर्ती है व उपचार किया जा रहा है। सीएमएचओ के अनुसार अस्पताल संचालित करने हेतु विधिवत अनुमति और लाइसेंस प्रदान नहीं किया गया है इसके बावजूद भी संचालक द्वारा हॉस्पिटल का संचालन किया जा रहा था। जिसके चलते सील करने की कार्यवाही की जा रही थी। पर अस्पताल के संचालक डॉक्टर गोकुल बंजारे के द्वारा कार्यवाही का विरोध करते हुए जम कर हंगामा मचाया गया। संचालक डॉक्टर के हंगामे को देखते हुए एसडीम अजीत पुजारी ने लोरमी एसडीओपी माधुरी धीरही को सूचना दी। सूचना मिलने पर एसडीओपी माधुरी धीरही पुलिस बल के साथ अस्पताल पहुंचीं। डॉक्टर द्वारा एसडीओपी से भी हुज्जत करने का प्रयास किया गया। पर एसडीओपी के द्वारा डॉक्टर को जमकर फटकार लगाते हुए लाइसेंस मांगा गया। अस्पताल संचालक का लाइसेंस नहीं होने के बावजूद भी अस्पताल चलाने पर एसडीओपी ने डॉक्टर पर करनी कार्यवाही करने की चेतावनी देते हुए शासकीय कार्य में बाधा डालने पर गिरफ्तार कर लिया और थाने लेकर पहुंचीं। डॉक्टर के खिलाफ शासकीय कार्य में बाधा डालने पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 296,351(2),221,132 के तहत अपराध दर्ज किया गया है। वही बिना लाइसेंस व नर्सिंग होम एक का पालन किया अस्पताल संचालक पर बुद्ध केयर अस्पताल में आगामी आदेश तक ओपीडी,आईपीडी सेवा बंद करते हुए अस्पताल को सील करने की कार्यवाही की गई है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर, शनिवार 09 नवंबर 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

देश में आतंक का माहौल

सुरक्षा के मोर्चे पर चुस्ती और सख्ती के तमाम दावों के बावजूद देश में आतंक का माहौल क्यों लौट रहा है? झूठी धमकियां देने वालों या हमले की तैयारी में लगे समूहों के बारे में खुफिया एजेंसियां पूर्व सूचना क्यों नहीं जुटा पा रही हैं? जम्मू-कश्मीर में निर्वाचित सरकार के पद संभालने के कुछ दिनों के अंदर ही आतंकवादियों ने कहर ढाया है। श्रीनगर-लेह राजमार्ग पर सोनमर्ग के पास रविवार को उनके हमले में सात लोग मारे गए। इनमें ज्यादातर दूसरे राज्यों से आए कर्मी हैं, जो वहां निर्माण कार्य में लगे थे। दो बातें खास हैं। कश्मीर घाटी में जारी निर्माण कार्यों से संबंधित स्थल पर हाल के वर्षों में हुआ यह पहला हमला है। फिर यह वहां हुआ, जिसके बारे में पिछले एक दशक से माना जाता था कि वह इलाका आतंकवाद के साये से मुक्त हो चुका है। बताया गया है कि ताजा हमला पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों ने किया। जिस रोज यह हमला हुआ, उसी दिन नई दिल्ली के रोहिणी इलाके में सीआरपीएफ पब्लिक स्कूल के बाहर बम धमाका हुआ, जिससे स्कूल परिसर की बाउंड्री वॉल क्षतिग्रस्त हो गई। प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स ने इस हमले की जिम्मेदारी ली है। उधर रविवार को ही 25 उड़ानों के दौरान उनमें बम होने की धमकी मिली, जिस वजह से उनकी इमरजेंसी लैंडिग करानी पड़ी। इसके पहले शनिवार को 30 से ज्यादा उड़ानों को ऐसी धमकियां मिली थीं। ये सभी फर्जी निकलीं, मगर दोनों दिन इनकी वजह से हवाई यात्राएं बाधित हुईं और यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। दरअसल, थोड़ा पीछे जाकर देखें, तो काफी समय से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्कूलों और अस्पतालों में बम होने की धमकियां मिल रही हैं। अब तक ये धमकियां फर्जी साबित हो रही थीं, लेकिन रविवार को आखिरकार सचमुच विस्फोट हो गया। ऐसी घटनाओं ने देश में आतंक का माहौल लौटा दिया है। इससे सवाल उठा है कि सुरक्षा के मोर्चे पर चुस्ती और सख्ती के तमाम दावों के बावजूद देश में ये माहौल क्यों लौट रहा है? झूठी धमकियां देने वालों या हमले की तैयारी में लगे समूहों के बारे में खुफिया एजेंसियां पूर्व सूचना क्यों नहीं जुटा पा रही हैं? जम्मू-कश्मीर का मामला ज्यादा गंभीर है। जम्मू क्षेत्र आतंकवादी हमलों के नए ठिकाने के रूप में उभरा है, जबकि अब कश्मीर घाटी में भी ऐसी वारदातों ने फिर सिर उठा लिया है। आखिर क्यों?

भारत के रतन का जाना...

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

आज श्री रतन टाटा जी के निधन को एक महीना हो रहा है। पिछले महीने आज के ही दिन जब मुझे उनके गुजरने की खबर मिली, तो मैं उस समय आसियान समिट के लिए निकलने की तैयारी में था। रतन टाटा जी के हमसे दूर चले की जाने की वेदना अब भी मन में है। इस पीड़ा को भुला पाना आसान नहीं है। रतन टाटा जी के तौर पर भारत ने अपने एक महान सपूत को खो दिया है...एक अमूल्य रत्न को खो दिया है। आज भी शहरों, कस्बों से लेकर गांवों तक, लोग उनकी कमी को गहराई से महसूस कर रहे हैं। हम सबका ये दुख साझा है। चाहे कोई उद्योगपति हो, उभरता हुआ उद्यमी हो या कोई प्रोफेशनल हो, हर किसी को उनके निधन से दुख हुआ है। पर्यावरण रक्षा से जुड़े लोग...समाज सेवा से जुड़े लोग भी उनके निधन से उतने ही दुखी हैं। और ये दुख हम सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में महसूस कर रहे हैं। युवाओं के लिए, श्री रतन टाटा एक प्रेरणास्रोत थे। उनका जीवन, उनका व्यक्तित्व हमें याद दिलाता है कि कोई सपना ऐसा नहीं जिसे पूरा ना किया जा सके, कोई लक्ष्य ऐसा नहीं जिसे प्राप्त नहीं किया जा सके। रतन टाटा जी ने सबको सिखाया है कि विनम्र स्वभाव के साथ, दूसरों की मदद करते हुए भी सफलता पाई जा सकती है। रतन टाटा जी, भारतीय उद्यमशीलता की बेहतरीन परंपराओं के प्रतीक थे। वो विश्वसनीयता, उत्कृष्टता और बेहतरीन सेवा जैसे मूल्यों के अडिग प्रतिनिधि थे। उनके नेतृत्व में, टाटा समूह दुनिया भर में सम्मान, ईमानदारी और विश्वसनीयता का प्रतीक बनकर नई ऊंचाइयों पर पहुंचा। इसके बावजूद, उन्होंने अपनी उपलब्धियों को पूरी विनम्रता और सहजता के साथ स्वीकार किया। दूसरों के सपनों का खुलकर समर्थन करना, दूसरों के सपने पूरा करने में सहयोग करना, ये श्री रतन टाटा के सबसे शानदार गुणों में से एक था। हाल के वर्षों में, वो भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम का मार्गदर्शन करने और भविष्य की संभावनाओं से भरे उद्यमों में निवेश करने के लिए जाने गए। उन्होंने युवा आंत्रप्रेन्योर की आशाओं और आकांक्षाओं को समझा, साथ ही भारत के भविष्य को आकार देने की उनकी क्षमता को पहचाना। भारत के युवाओं के प्रयासों का समर्थन करके, उन्होंने नए सपने देखने वाली नई पीढ़ी को जोखिम लेने और सीमाओं से परे जाने का हौसला दिया। उनके इस कदम ने भारत में इनोवेशन और आंत्रप्रेन्योरशिप की संस्कृति विकसित करने में बड़ी मदद की है। आने वाले दशकों में हम भारत पर इसका सकारात्मक प्रभाव जरूर देखेंगे। रतन टाटा जी ने हमेशा बेहतरीन क्वालिटी के प्रॉडक्ट...बेहतरीन क्वालिटी की सर्विस पर जोर दिया और भारतीय उद्यमों को ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करने का रास्ता दिखाया। आज जब भारत 2047 तक विकसित होने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तो हम ग्लोबल बेंचमार्क स्थापित करते हुए ही दुनिया में अपना परचम लहरा सकते हैं। मुझे आशा है कि उनका ये विजन हमारे देश की भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेगा और भारत वर्ल्ड क्लास क्वालिटी के लिए अपनी पहचान मजबूत करेगा। रतन टाटा जी की महानता बोर्डरूम या सहयोगियों की मदद करने तक ही सीमित नहीं थी। सभी जीव-जंतुओं के प्रति उनके मन में करुणा थी। जानवरों के प्रति उनका गहरा प्रेम जगजाहिर था और वे पशुओं के कल्याण पर केन्द्रित हर प्रयास को बढ़ावा देते थे। वो अक्सर अपने डॉग्स की तस्वीरें साझा करते थे, जो उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा थे। मुझे याद है, जब रतन टाटा जी को लोग आखिरी विदाई देने के लिए उमड़ रहे थे...तो उनका डॉग 'गोवा' भी वहां नम आंखों के साथ पहुंचा था। रतन टाटा जी का जीवन इस बात की याद दिलाता है कि लीडरशिप का आकलन केवल उपलब्धियों से ही नहीं किया जाता है, बल्कि सबसे कमजोर लोगों की देखभाल करने की उसकी क्षमता से भी किया जाता है। रतन टाटा जी ने हमेशा, नेशन फर्स्ट की भावना को सर्वोपरि रखा। 26/11 के आतंकवादी हमलों के बाद उनके द्वारा मुंबई के प्रतिष्ठित ताज होटल को पूरी तत्परता के साथ फिर से खोलना, इस राष्ट्र के एकजुट होकर उठ खड़े होने का प्रतीक था। उनके इस कदम ने बड़ा संदेश दिया कि कुछ भारत रुकेगा नहीं...भारत निडर है और आतंकवाद के सामने झुकने से इनकार करता है। व्यक्तिगत तौर पर, मुझे पिछले कुछ दशकों में उन्हें बेहद करीब से जानने का सौभाग्य मिला। हमने गुजरात में साथ मिलकर काम किया। वहां उनकी कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर निवेश किया गया। इनमें कई ऐसी परियोजनाएं भी शामिल थीं, जिसे लेकर वे बेहद भावुक थे। जब मैं केन्द्र सरकार में आया, तो हमारी घनिष्ठ बातचीत जारी रही और वो हमारे राष्ट्र-निर्माण के प्रयासों में एक प्रतिबद्ध भागीदार बने रहे। स्वच्छ भारत मिशन के प्रति श्री रतन टाटा का उत्साह विशेष रूप से मेरे दिल को छू गया था। वह इस जन आंदोलन के मुखर समर्थक थे। वह इस बात को समझते थे कि स्वच्छता और स्वस्थ आदतें भारत की प्रगति की दृष्टि से कितनी महत्वपूर्ण हैं। अक्टूबर की शुरुआत में स्वच्छ भारत मिशन की दसवीं वर्षगांठ के लिए उनका वीडियो संदेश मुझे अभी भी याद है। यह वीडियो संदेश एक तरह से उनकी अंतिम सार्वजनिक उपस्थितियों में से एक रहा है। कैंसर के खिलाफ लड़ाई एक और ऐसा लक्ष्य था, जो उनके दिल के करीब था। मुझे दो साल पहले असम का वो कार्यक्रम याद आता है, जहां हमने संयुक्त रूप से राज्य में विभिन्न कैंसर अस्पतालों का उद्घाटन किया था। उस अवसर पर अपने संबोधन में, उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि वो अपने जीवन के आखिरी वर्षों को हेल्थ सेक्टर को समर्पित करना चाहते हैं। स्वास्थ्य सेवा एवं कैंसर संबंधी देखभाल को सुलभ और किफायती बनाने के उनके प्रयास इस बात के प्रमाण हैं कि वो बीमारियों से जूझ रहे लोगों के प्रति कितनी गहरी संवेदना रखते थे। मैं रतन टाटा जी को एक विद्वान व्यक्ति के रूप में भी याद करता हूं - वह अक्सर मुझे विभिन्न मुद्दों पर लिखा करते थे, चाहे वह शासन से जुड़े मामले हों, किसी काम की सराहना करना हो या फिर चुनाव में जीत के बाद बधाई सन्देश भेजना हो। अभी कुछ सप्ताह पहले, मैं स्पेन सरकार के राष्ट्रपति श्री पेड्रो सान्चेज के साथ वडोदरा में था और हमने संयुक्त रूप से एक विमान फैक्ट्री का उद्घाटन किया। इस फैक्ट्री में सी-295 विमान भारत में बनाए जाएंगे। श्री रतन टाटा ने ही इस पर काम शुरू किया था। उस समय मुझे श्री रतन टाटा की बहुत कमी महसूस हुई। आज जब हम उन्हें याद कर रहे हैं, तो हमें उस समाज को भी याद रखना है जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। जहां व्यापार, अच्छे कार्यों के लिए एक शक्ति के रूप में काम करे, जहां प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता को महत्व दिया जाए और जहां प्रगति का आकलन सभी के कल्याण और खुशी के आधार पर किया जाए। रतन टाटा जी आज भी उन जिंदगियों और सपनों में जीवित हैं, जिन्हें उन्होंने सहारा दिया और जिनके सपनों को साकार किया। भारत को एक बेहतर, सहृदय और उम्मीदों से भरी भूमि बनाने के लिए आने वाली पीढ़ियां उनकी सदैव आभारी रहेंगी।

आलेख

राजनीतिक मकसद साधने की मंशा न हो

अजीत द्विवेदी

केंद्र सरकार ने जनगणना की अधिसूचना जारी नहीं की है, लेकिन एक, जनवरी 2025 से प्रशासनिक सीमाएं सील हो जाएंगी और उससे पहले भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त मृत्युंजय कुमार नारायण का कार्यकाल अगस्त 2026 तक बढ़ा दिया गया है, जिससे यह संकेत मिल रहा है कि अगले साल जनगणना होगी। उसके अगले साल यानी 2026 में लोकसभा सीटों का परिसीमन होगा और फिर इसी आधार पर 2029 में साथ होने वाले चुनाव में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की जाएंगी। इस बीच तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने एक बड़ा सवाल उठाया है। उन्होंने एक सामाजिक कार्यक्रम में, जहां 16 नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद दिया जाना था, वहां कहा कि जब हम ऐसी स्थिति का सामना कर रहे हैं, जहां संसद में सीटों की संख्या कम होने वाली है तो हमें छोटा परिवार क्यों रखना चाहिए'? इसके आगे उन्होंने नवविवाहित जोड़ों से ज्यादा बच्चे पैदा करने और उन्हें सुंदर तमिल नाम देने का आग्रह किया। हालांकि उन्होंने संसद में सीटों की संख्या कम होने के बारे में विस्तार से कुछ नहीं कहा लेकिन उनका इशारा परिसीमन के बाद की स्थितियों की ओर था। उनसे पहले आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने भी लोगों से ज्यादा बच्चे पैदा करने का आग्रह किया था। हालांकि उनका घोषित सरोकार यह था कि दक्षिण के राज्यों में आबादी बूढ़ी हो रही है और कामकाजी युवाओं की संख्या कम हो रही है। परंतु कहीं न कहीं वे भी इस बात से चिंतित हैं कि अगर आबादी के आधार पर लोकसभा सीटों का परिसीमन हुआ तो दक्षिण के राज्यों की राजनीतिक हैसियत घटेगी। तभी यह बड़ा सवाल है कि लोकसभा सीटों के परिसीमन का आधार क्या होगा? क्या सीधे तौर पर जनसंख्या के हिसाब से सीटों की संख्या में बढ़ोतरी कर दी जाएगी? अगर ऐसा हुआ तो उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र जैसे बड़ी आबादी वाले राज्यों को फायदा होगा और दक्षिण भारत के राज्य घाटे में रहेंगे। तभी चंद्रबाबू नायडू और एमके स्टालिन की चिंता सामाजिक या आर्थिक नहीं, बल्कि राजनीतिक दिखती है। यह चिंता क्षेत्रीय वर्चस्व और फिर अस्मिता की राजनीति में भी बदल सकती है, जिससे एक बड़ा खतरा पैदा हो सकता है। इसलिए सरकार को परिसीमन के फॉर्मूले के बारे में तर्कसंगत तरीके से विचार करना होगा और उस पर सभी दलों व राज्यों की सहमति अनिवार्य रूप से लेनी होगी। ध्यान रहे लोकसभा सीटों का परिसीमन जम्मू कश्मीर की तरह नहीं होगा, जहां मनमाने तरीके से भौगोलिक सीमाओं का ध्यान रखे बगैर इस तरह से विधानसभा सीटों का सीमांकन हुआ कि जम्मू क्षेत्र में छह सीट बढ़ गई और कश्मीर घाटी में सिर्फ एक सीट बढ़ी। आजादी के बाद से मोटे तौर पर आबादी के आधार पर ही लोकसभा और विधानसभा सीटों की संख्या तय होती रही है। तभी उत्तर प्रदेश में 80 सीटें हैं और तमिलनाडु में 39 हैं। लेकिन आजादी के बाद राज्यों ने जनसंख्या नियंत्रण के उपायों को अलग अलग तरीके से लागू किया। आर्थिक रूप से विकसित राज्यों ने बेहतर ढंग से जनसंख्या नियंत्रण का किया तो उनके यहां जनसंख्या वृद्धि की दर राष्ट्रीय औसत से काफी नीचे आ गई। दक्षिण के राज्यों में तो जनसंख्या बढने की दर रिप्लसमेंट रेट से भी कम है। रिप्लेसमेंट रेट 2.1 है। इसका मतलब होता है कि अगर दो लोग मिल कर 2.1 बच्चे पैदा करते हैं तो जनसंख्या नहीं बढ़ेगी वह स्थिर हो जाएगी। दक्षिण के राज्यों में जनसंख्या बढने की दर 1.6 फीसदी है, जो रिप्लेसमेंट रेट से काफी कम है, जबकि उत्तर के राज्यों खास कर बिहार और उत्तर प्रदेश में वृद्धि दर रिप्लेसमेंट रेट से ज्यादा है। ऐतिहासिक रूप से यह स्थिति रही है तभी दक्षिण के राज्यों में आबादी नियंत्रित हो गई और उत्तर भारत के राज्यों में बढ़ती चली गई। हालांकि अब वहां भी रफ्तार धीमी हो रही है लेकिन उन राज्यों की जनसंख्या बहुत ज्यादा है। अगर इस आधार पर उनकी लोकसभा सीटें बढ़ती हैं तो यह उन राज्यों के साथ अन्याय होगा, जिन्होंने अपने यहां आबादी का बढना रोका। उन्होंने अच्छा काम किया इसके लिए उनको सजा नहीं दी जानी चाहिए। अगर सरकार पारंपरिक रूप से आबादी को आधार बनाती है और औसतन 20 लाख की आबादी पर एक सीट का फॉर्मूला तय होता है तो दक्षिण के ज्यादातर राज्यों में सीटों में कोई बदलाव नहीं होगा।

देश में महिला की अस्मिता का पक्ष.....

डा. वरिंदर भाटिया

अब भी दुनिया के एक बड़े हिस्से में इस अवधारणा को सामाजिक स्वीकृति मिली हुई है कि शादी के रिश्ते में सेक्स के लिए सहमति का कोई महत्व नहीं है। दूसरी तरफ आज की तारीख में 150 देशों में मैरिटल रेप को अपराध घोषित किया जा चुका है। प्रथाओं के चलते, अपने देश में कुछ खास दिनों में सेक्स से परहेज अनिवार्य होता था। लेकिन ये सब अवरोध पुरुषों के लिए थे। एक तरह से यह मान कर चला जाता था कि सेक्स पर स्त्री मौन रहेगी। जब भी उसका पति उसके साथ सहवास की इच्छा व्यक्त करेगा, पत्नी ना-नुकुर नहीं कर सकती। यदि कहीं किसी स्त्री ने अपनी पहल पर पति से सेक्स की इच्छा व्यक्त की तो उसे बेह्या और बेशरम कहा जाता था। स्त्री की यह स्थिति दुनिया के सभी कथित समाजों में है। अपने यहां क्या स्थिति है, हम सब भली-भांति सब कुछ शायद जानते हैं। गहराई से सोचें तो मैरिटल रेप का मसला सीधे तौर पर महिलाओं की शारीरिक आजादी से जुड़ा है। लेकिन अब एक बड़ा वर्ग यह मानने लगा है कि यदि पुरुष उससे जबरदस्ती सेक्स करे तो यह यौन दुष्कर्म होगा मैरिटल रेप, यानी पत्नियों के ऊपर यौन हिंसा जायज है या फिर नाजायज, इसको लेकर चर्चा जोरों पर है। आखिर मैरिटल रेप क्या है? भारतीय न्याय संहिता के तहत अगर कोई पुरुष किसी महिला की सहमति के बगैर उसके साथ संबंध बनाता है तो यह बलात्कार है। इसके लिए कम से कम दस साल की सजा का प्रावधान है और कुछ मामलों में यह सजा उम्रकैद भी हो सकती है। हालांकि बिना सहमति के कोई व्यक्ति अगर अपनी पत्नी के साथ संबंध बनाए और अगर पत्नी की उम्र 18 साल या उससे अधिक है तो यह कानूनन बलात्कार नहीं है। इस समय यह ज्वलंत मुद्दा देश की न्याय व्यवस्था के समक्ष विचाराधीन है। भारत उन तीन दर्जन देशों में से एक है जहां शादी के बाद अपनी पत्नी से बिना मंजूरी के संबंध बनाने को बलात्कार नहीं माना जाता है। दुनिया के 185 देशों में से, 77 देशों में मैरिटल रेप पर कानून बना है। बाकी 108 देशों में से 74 देश ऐसे हैं जहां महिलाओं को रिपोर्ट दर्ज कराने का अधिकार है, जबकि भारत समेत 34 देश ऐसे हैं जहां पत्नी से रेप करने वाले पति को समाज के साथ कानून भी दोषी नहीं मानता है। इंटीमेसी यानी कामुकता और सेक्स संबंध पति-पत्नी के रिश्ते का अहम पहलू है, लेकिन अगर पति-पत्नी के बीच दुष्कर्म की बात कही जाए तो शायद कुछ लोग इसे मानने से इनकार करेंगे। लेकिन मैरिटल रेप पर हमारे देश में आए दिन चर्चाएं हो रही हैं। मैरिटल रेप यानी जब पति पर अपनी ही पत्नी के दुष्कर्म के आरोप लगें। जब पति ही पत्नी का शारीरिक शोषण करे, तो अनेक सवाल खड़े हो जाते हैं। अब आप कहेंगे कि पति-पत्नी के बीच तो शारीरिक संबंध होते ही हैं, तो फिर यह मैरिटल रेप दुष्कर्म कैसे हुआ? दरअसल मैरिटल रेप को लेकर हमारे देश में दो मत हैं। एक वर्ग का मानना है कि मैरिटल रेप जैसे कानून के आने के बाद इसका गलत इस्तेमाल किया जाएगा, क्योंकि शादी से जैसे रिश्ते में यह तय करना कि कब रेप हुआ है और कब नहीं, बेहद मुश्किल है। मैरिटल रेप के आरोपी को अपने आपको निर्दोष साबित करने में कठिनाई होगी। साथ ही कुछ पत्नियों द्वारा कानून का ज्यादातर दुरुपयोग किया जाएगा। वहीं महिला संगठन इसे महिलाओं की सुरक्षा को लेकर जरूरी मानते हैं। उनका मानना है कि मैरिटल रेप स्त्री-पुरुष के बीच एक मनोविकार है। वैवाहिक जीवन में संतुष्टि का आनंद तभी मिलता है जब स्त्री और पुरुष के बीच सहमति होती है। लेकिन असहमति तमाम विद्वेष और विकारों को जन्म देती है। इस तरह की हरकत से स्त्री की निगाह में पुरुष गिर जाता है। उस स्त्री की नजरों में देवता बना पति दानव बन जाता है। यूं तो किसी भी वैवाहिक संबंध में पति और पत्नी लगातार एक-दूसरे से उचित यौन संबंध की अपेक्षा रखते हैं। हालांकि इसका मतलब यह नहीं है कि पति अपनी पत्नी के शरीर की आजादी को हिंसक तरीके से भंग कर सकता है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) ने भी 1993 में महिलाओं के खिलाफ हिंसा संबंधी अपने घोषणापत्र में मैरिटल रेप को शामिल किया था। यूएन ने सभी देशों से कहा था कि इसे महिलाओं के साथ हिंसा के तौर पर ही देखा जाए। साथ ही, इससे जुड़े कानून बनाने की भी गुजारिश की थी। विश्लेषकों के अनुसार, चूंकि यह अपराध घर के बंद कमरों में होता है, इसलिए इसे लेकर समाज में शुरू से ही एक तरह की मौन स्वीकृति रही है। यौन हिंसा को लेकर बड़े स्तर पर अलग-अलग देशों के कानून में प्रगतिशील बदलाव देखे गए हैं। वहीं, पति द्वारा किए जाने वाले 'वैवाहिक बलात्कार' को आज भी एक सवालिया नजर से देखा जाता है। अमरीकी थिंक टैंक प्यू रिसर्च के एक सर्वे के मुताबिक, हर 10 में से 9 भारतीयों का यह मानना है कि पत्नियों को पतियों की बात माननी चाहिए। बात न मानने की सूरत में और महिलाओं की शारीरिक स्वायत्तता के हनन का नतीजा अक्सर हिंसा के रूप में सामने आता है। अब भी दुनिया के एक बड़े हिस्से में इस अवधारणा को सामाजिक स्वीकृति मिली हुई है कि शादी के रिश्ते में सेक्स के लिए सहमति का कोई महत्व नहीं है। दूसरी तरफ आज की तारीख में 150 देशों में मैरिटल रेप को अपराध घोषित किया जा चुका है। प्रथाओं के चलते, अपने देश में कुछ खास दिनों में सेक्स से परहेज अनिवार्य होता था। लेकिन ये सब अवरोध पुरुषों के लिए थे। एक तरह से यह मान कर चला जाता था कि सेक्स पर स्त्री मौन रहेगी। जब भी उसका पति उसके साथ सहवास की इच्छा व्यक्त करेगा, पत्नी ना-नुकुर नहीं कर सकती। यदि कहीं किसी स्त्री ने अपनी पहल पर पति से सेक्स की इच्छा व्यक्त की तो उसे बेहया और बेशरम कहा जाता था। स्त्री की यह स्थिति दुनिया के सभी कथित समाजों में है। अपने यहां क्या स्थिति है, हम सब भली-भांति सब कुछ शायद जानते हैं।

भारतीय क्रिकेट में बदलाव की मांग उचित

अरविंद शर्मा

यह भारतीय क्रिकेट के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है, पुनर्मूल्यांकन, पुनर्संतुलन और सुधार की दिशा में निर्णायक कदम उठाने का समय है। आगे की राह में नेतृत्व में रणनीतिक बदलाव, चयन मानदंडों का पुनर्मूल्यांकन और नई प्रतिभाओं को पोषित करने की प्रतिबद्धता अवश्य ही शामिल होनी चाहिए घटनाओं के एक उल्लेखनीय और अप्रत्याशित मोड़ में, न्यूजीलैंड ने भारतीय धरती पर भारत के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला में ऐतिहासिक जीत हासिल की, जिसने प्रशंसकों और विशेषज्ञों को चौंका दिया। यह उपलब्धि कोई छोटी उपलब्धि नहीं है, क्योंकि भारत की घरेलू पिचें, जो अपने स्पिन-अनुकूल स्वभाव के लिए जानी जाती हैं, लंबे समय से राष्ट्रीय टीम के लिए एक किला रही हैं, जिससे किसी भी मेहमान टीम द्वारा श्रृंखला जीतना दुर्लभ हो गया है। यह 3.0 की जीत न्यूजीलैंड के लिए एक अभूतपूर्व सफलता है और भारतीय क्रिकेट के लिए एक महत्वपूर्ण झटका है। इसने खेल के सभी निकायों के भीतर चिंतन की लहर और बदलाव की मांग को बढ़ावा दिया है। भारत में टेस्ट सीरीज जीतना क्रिकेट में सबसे कठिन चुनौतियों में से एक माना जाता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत ने घरेलू मैदानों पर दबदबा बनाया है, जिसमें स्पिन के अनुकूल परिस्थितियों का लाभ उठाया गया है और विरोधियों से उच्च स्तर की अनुकूलनशीलता और कौशल की आवश्यकता होती है। न्यूजीलैंड का क्लीन स्वीप न केवल उनकी अनुकूलनशीलता को दर्शाता है, बल्कि तैयारी और रणनीति के असाधारण स्तर को भी दर्शाता है जिसने उन्हें भारत की ताकत को खत्म करने की अनुमति दी। यह जीत निस्संदेह विश्व क्रिकेट में शीर्ष दावेदार के रूप में न्यूजीलैंड की प्रतिष्ठा को बढ़ाएगी। श्रृंखला में आश्चर्यजनक हार के बाद, भारत का क्रिकेट समुदाय निराशा से भरा हुआ है, जिससे टीम की दिशा और नेतृत्व पर सवाल उठ रहे हैं। प्रशंसकों और विश्लेषकों ने भारत के असंगत प्रदर्शन पर चिंता व्यक्त की है और कोचिंग तथा चयन रैंक के भीतर आत्मनिरीक्षण की मांग की है। आलोचकों का तर्क है कि कोचिंग स्टाफ ने देश की प्रतिभा के विशाल पूल का अधिकतम उपयोग नहीं किया है, खासकर बल्लेबाजी, गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण के प्रमुख क्षेत्रों में। टीम प्रबंधन के लिए एक नए दृष्टिकोण की मांग की जा रही है, जिसमें कुछ लोग टीम में नए दृष्टिकोण और रणनीतियों को शामिल करने के लिए पूर्व भारतीय टेस्ट कप्तानों को विभिन्न कोचों के रूप में शामिल करने की वकालत कर रहे हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसने टीम चयन प्रक्रियाओं की बारीकी से जांच करने का आग्रह किया है। कई लोगों का मानना है कि उभरते हुए खिलाड़ियों को अधिक अवसर दिए जाने चाहिएं, ताकि स्पॉट के लिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित हो और एक नया जोश भरा टीम लाइनअप हो जो अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के दबाव को संभाल सके। इस झटके के बावजूद, विदेशी धरती पर भारत की हाया सफलताएं, जैसे कि ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में उल्लेखनीय जीत, चुनौतीपूर्ण वातावरण में टीम की लचीलापन और क्षमता की याद दिलाती हैं। इन जीतों ने वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा को मजबूत किया है, जो घर से बाहर उनकी अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है। हालांकि, न्यूजीलैंड की मौजूदा जीत, साथ ही 2021 आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप की जीत, कीवी टीम के एक दुर्जेय क्रिकेट पक्ष के रूप में खुद के विकास को रेखांकित करती है। उनकी अनुकूलन क्षमता, सामरिक प्रतिभा और अनुशासित दृष्टिकोण ने उन्हें एक ऐसी टीम बना दिया है जिसका सम्मान किया जाना चाहिए जैसा कि यह श्रृंखला समाप्त हो गई है, यह भारतीय क्रिकेट के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है, पुनर्मूल्यांकन, पुनर्संतुलन और सुधार की दिशा में निर्णायक कदम उठाने का समय है। आगे की राह में नेतृत्व में रणनीतिक बदलाव, चयन मानदंडों का पुनर्मूल्यांकन और नई प्रतिभाओं को पोषित करने की प्रतिबद्धता शामिल होगी। न्यूजीलैंड के लिए, यह कठिन संघर्ष वाली जीत उनके धैर्य और रणनीतिक कौशल का प्रमाण है। यह याद दिलाता है कि दृढ़ता और अनुकूलनशीलता सबसे चुनौतीपूर्ण वातावरण पर भी विजय प्राप्त कर सकती है। न्यूजीलैंड की जीत को दृढ़ संकल्प और उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में मनाया जाएगा, जो क्रिकेट की दुनिया में एक प्रेरणादायक उपलब्धि है। जबकि भारतीय प्रशंसक तेजी से पुनरुत्थान की उम्मीद कर रहे हैं और न्यूजीलैंड की तर्ज पर भारत की ऑस्ट्रेलिया की धरती पर जीत की उम्मीद कर रहे हैं। साथ ही यह भी सच है कि वर्ल्ड कप और अन्य सीरीज तथा मैचों में हमारे देश की क्रिकेट टीम का प्रदर्शन अब तक बहुत अच्छा भी रहा है। हमारे देश की क्रिकेट टीम दुनिया की नंबर वन टीम भी है। हमारे देश के हर खिलाड़ी का सपना और विश्वास होता है कि वो जीत हासिल करे, लेकिन खेल में हर बार हर खिलाड़ी को सफलता ही मिले, यह भी संभव नहीं। हमें अपनी टीम के शानदार प्रदर्शन को याद रखना चाहिए। अगर किसी मैच में हार भी मिलती है तो हमें अपने खिलाड़ियों का विरोध नहीं करना चाहिए।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शनिवार 09 नवम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

भगवान की भक्ति मात्र एक क्रिया ही नहीं, बल्कि जीवन के रूपांतरण का एक ऐसा मार्ग है जो भव-भव के सांसारिक दुःख को नष्ट करता है : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

इंदौर (विश्व परिवार)। भगवान की भक्ति मात्र एक क्रिया ही नहीं, बल्कि जीवन के रूपांतरण का एक ऐसा मार्ग है जो भव-भव के सांसारिक दुःख को नष्ट करता है संस्कृत भाषा में लिपीबद्ध श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान जीवन की सर्व श्रेष्ठ आराधना है। उपरोक्त उद्गार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने सिद्धचक्र महामंडल विधान के दूसरे दिवस धर्म सभा में व्यक्त किये। उन्होंने भक्ति का आनंद ले रहे भक्तों को सम्बोधित करते हुये कहा इस विधान को सबसे पहले इंदौर के सर सेठ हुकमचंद जैन कासलीवाल ने ही लिपीवद्ध कराया था उनकी इस विधान में बहुत श्रद्धा थी और अक्सर वह इसे किया करते थे।

मुनि श्री ने कहा कि किसी भी विधान या पूजा में भाव विशुद्धि का बहूत महत्व है, भगवान के प्रति सच्चा अनुराग ही चमत्कार को प्रकट करता है, निस्वार्थ भक्ती से मैना सुंदरी ने अपने पति का भयंकर कुष्ट रोग मिटाया था तथा धनंजय सेठ की कथा सुनाते हुये कहा कि उसका एक मात्र पुत्र को सर्प ने काट लिया पुत्र अचेत है और वह भगवान की भक्ती में लीन है इधर सेठानी विलाप कर रही है लेकिन सेठजी को कूछ भी सुनाई नहीं दे रहा इकलौते पुत्र के मोह में बाबली सेठानी ने सेठजी को न जाने क्या क्या नहीं सुनाया और अचेत पुत्र को सेठजी के आगे ले जाकर पटक दिया, सेठजी की पूजा समाप्त हुई और उन्होंने उस पुत्र के ऊपर भगवान के अभिषेक का गंधोदक छिड़का कि वह पुत्र ऐसे उठा जैसे अभी अभी सोकर उठा हो।मुनि श्री ने कहा कि यह कोई चमत्कार नहीं वल्कि कारण कार्य व्यवस्था का एक उदाहरण है, उस विषम घड़ी में भी सेठजी ने अपने मोह और राग भाव को प्रकट नहीं होंने श दिया, जब पुण्य प्रवल होता है तो फांसी का फंदा भी गले की माला बन जाती है, और शूली भी सिंघासन का रूप धारण कर लेती है, यह तो हमारे श्रद्धा का परिणाम है इसी का नाम अरण्य भाव है, अपने जीवन में भक्ती को ऐसा जगाऐं कि वह भाव विशुद्धि के साथ दिन दूनी रात चौगनी बृद्धि करे। प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी एवं मीडिया प्रभारी राहुल जैन ने बताया प्रात: 5:45 बजे मुनि श्री के मुखारविंद से भावना योग के साथ शुद्ध बस्त्रों के साथ शुरुआत हुई तत्पश्चात श्री जी का अभिषेक हुआ एवं मुनि श्री के मुखारविंद से शांतिमंत्रों के साथशांतिधारा संपन्न हुई।नित्यनियम पूजन के साथ ठीक नौ बजे से नंदीश्वर दीप पूजन एवं सिद्धभक्ती के साथ श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का प्रारंभ हुआ एवं प्रथम वलय के आठ तथा द्वितीय बलय के सोलह अर्घ चड़ाये गये एवं प्रत्येक मंत्रों का नौ नौ बार बाचन हुआ जिसका उच्चारण मुनि श्री प्रमाण सागर मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज मुनि श्री संधान सागर महाराज कर रहे थे। विधानाचार्य अशोक भैया, अभयभैया, के साथ उनके सहयोगी पंडित सुदर्शन जी, अमित शास्त्री, एवंअशोक शास्त्री सहयोग कर रहे थे।

संगीतकार की स्वर लहरियों के साथ में भक्त भक्ती में झूम रहे थे। विगत रात्री में मंगल आरती का सौभाग्य गजेंद्र गिरीश गौतम गिन्नी परिवार को मिला तथा कलश स्थापना सुनील सुधीर विलाला परिवार ने किया इस अवसर पर धर्मप्रभावना समिति के अध्यक्ष अशोक रानी डोसी, कार्यक्रम संयोजक धर्मेन्द्र जैन (सिन्केम) नवीन आनंद गोधा, महामंत्री हर्ष जैन, चातुर्मास पुण्यार्जक मुकेश विजय पाटौदी, प्रदीप शास्त्री, डी.के.जैन राजीव निराला, शोभायात्रा के संयोजक जिनेश झांझरी, एवं पवन सिंघई, दिलीप गोधा, सहित विजयनगर के समस्त भक्तों ने मंगल आरती में भाग लिया एवं इस मंगल विधान में चार चांद लगा दिये।उपरोक्त जानकारी मीडिया प्रभारी राहुल जैन एवं प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी ने दी। -**अविनाश जैन**

तपो भूमी प्रणेता आचार्य श्री प्रज्ञा सागर महाराज जी को पट्टाचार्य महामहोत्सव की आमंत्रण पत्रिका भेंट की

नांदणी (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। समाधिस्थ गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी गुरुदेव के अंतिम उपदेशानुसार, आध्यात्म सरोवर के राजहंस आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी को पट्टाचार्य पद सुमति धाम, इंदौर में प्रदान किया जायेगा। नांदणी (महाराष्ट्र) में, शुक्रवार दिनांक 27 सितम्बर 2024 को इंदौर नगर के महादानी सुमति धाम के न्यासी श्री मनीष जी गोधा और सपना जी गोधा गुरु भक्त परिवार द्वारा, श्रुत संवेगी श्रमण मुनि सुव्रत सागर जी के निर्देशन में एक भव्य मीटिंग आयोजित की गई थी।

इस मीटिंग में देश के विविध राज्यों के अनेक गुरु - भक्तों ने सहभागिता की। मीटिंग के अन्तर्गत प्रमुख संयोजक श्री मनीष जी गोधा और श्रीमती सपना गोधा जी ने जानकारी दी की आयोजन 27 अप्रैल 2025 से 2 मई 2025 तक तीर्थ स्वरूप सुमति धाम, जिनालय इन्दौर (म.प्र.) में सम्पन्न होगा। रविवार 27 अप्रैल, 2025 को सम्पूर्ण संघों का एक साथ सुमति धाम में प्रवेश होगा। इस आयोजन में लगभग 500 संत-साध्वियाँ तथा 300 त्यागी-वृति सम्मिलित होंगे। 30 अप्रैल, अक्षय तृतीया के दिन पट्टाचार्य-पदारोहण के संस्कार होंगे। प्रात: काल मैं श्रमण संस्कृति के समाधिस्त गणाचार्य श्री विरागसागर महाराज जी की जन्म जयंती 2 मई को बड़ी धूमधाम से मनाई जाएगी। यह आयोजन एक विशाल रूप में लगभग 65 एकड़ में सम्पन्न होगा।

इंदौर नगर में प्रथम बार होने वाले चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्ध सागर महाराज जी पट्टाचार्य महामहोत्सव के लिए झालरापाटण में विराजमान प.पू आचार्य श्री प्रज्ञा सागर जी महाराज ससघं को पट्टाचार्य महामहोत्सव इंदौर आगमन हेतु श्रीफल भेंट कर आमंत्रण पत्रिका भेंट की गई। चर्या शिरोमणी आचार्य विशुद्ध सागर महाराज जी संघ के बालब्रह्मचारी पियुष भैया जी के नेतृत्व में महामहोत्सव कमेटी के गुरु भक्त परिवार के मनीष जी गोधा, सपना जी मनीष गोधा, एवं परिजनों ने गुरु चरणों में निवेदन किया कि महामहोत्सव में आप के पुरे संसघ का मंगलमय सानिध्य प्राप्त हो। गुरु भक्त परिवार के मनीष जी गोधा और सपना जी गोधा, एवं परिजनों ने महामहोत्सव में आप के पुरे संसघ का मंगलमय सानिध्य प्राप्त हो ऐसा गुरु चरणों में निवेदन किया। नमोस्तु शासन जयवंत हो।

-**अभिषेक अशोक पाटील**

श्रुतसंवेगी श्रमण श्री 108 आदित्यसागर जी महाराज का 13वां दीक्षा दिवस

नांदणी (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। संस्कारधानी जबलपुर के मस्तक पटल पर गौरव का चंदन तो उसी दिन लग चुका था, जब 24 मई 1986 के दिन, पिता राजेश और माँ वीणा की कोख में जन्म हुआ था सौभाग्य का

वैसे तो इस पुत्र का नाम सन्मति रखा गया था, पर कोई नहीं जानता था कि यही सन्मति एक दिन जिनशासन के यश आकाश को प्रकाशित करने वाला अद्वितीय आदित्य बन कर उदित होगा, एक दिन अपनी साधना और वात्सल्य के बल पर सहस्रों लोगों के जीवन में सौभाग्य बन कर प्रवेश कर जायेगा।

परंतु हम ने उनके चमत्कारों पर या लाखों लोगों द्वारा हो रहे उनके जय-जयकारों के सामने अपना मस्तक नहीं टेका, हम ने किसी भय या स्वार्थ से उन्हें अपना गुरु नहीं माना।

हम ने तो बहुत गहराई से समझा उस व्यक्ति को जिसने M.B.A. और B.B.A. जैसी शैक्षिक योग्यता, संपन्न एवं समृद्ध परिवार, स्वर्ण-आभूषणों के प्रतिष्ठित व्यापार और सुकुमारिता से भरे भविष्य की कामनाओं को एक पल में किसी तृण के समान छोड़ देने का साहस किया। जिसके पास विलासितापूर्ण जीवन जीने के अनेकों विकल्प मौजूद थे, जिसकी प्रखर दैहिक आभा, अप्रतिम सुंदरता, अद्वितीय बुद्धिलब्धि और पुण्य-शक्ति के आगे सभी सांसारिक सुख किसी चरण चंचरिक की तरह उसके सामने नतमस्तक होने को तैयार बैठे थे। परंतु इन सब मोह और सुखों के आगे तो भोगी झुका करते हैं योगी नहीं, सन्मति भैया ने जो पथ चुना था वह इन सब से ऊपर था- निर्ग्रंथ पथ, और फिर सन्मति भैया ने 08 नवम्बर 2011 को गुरु के प्रति समर्पण के विशुद्ध-सागर में ऐसी डुबकी लगाई कि सागर के अंदर जो गया वह थे सन्मति, पर जो बाहर आये वह थे आदित्य। जिन्होंने हम जैसे अनेकों को सत्पथ दिखाया, हम जब जब गिरने लगे उनके शब्दों ने हमें वापस उठाया, उन्होंने हमें कला सिखाई कि जीवन कैसे जिया जाता है, उन्होंने हमें बताया व्यक्ति को व्यक्तित्व कैसे बनाया जाता है। उन्हें शब्दों में बयाँ कर पाना संभव नहीं है, हाँ ! ये वही हैं जिनके लिये असंभव भी पूरी तरह असंभव नहीं है।

आज 13 वे गुरु उपकार दिवस पर आदित्यसागर जी महाराज जी के चरणों में वन्दे तद्गुण लब्धये। श्रुतसंवेगी श्रमण श्री 108 आदित्यसागर जी महाराज धरातल पर प्रत्यक्ष दर्शन देने वाली उन भव्य आत्माओं में से एक हैं जिनका सान्निध्य, पारस मणि के स्पर्श के समान है। नमोस्तु शासन जयवंत हो। -**अभिषेक अशोक पाटील**

राजस्थान प्राकृत अकादमी के विधिवत संचालन के लिए शास्त्री परिषद ने उप मुख्यमंत्री को दिया पत्र

किशनगढ़/राजस्थान (विश्व परिवार)। परम पूज्य प्राकृताचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी के मध्य राजस्थान के उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद्र बैरबा के आगमन पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद ने राजस्थान प्राकृत अकादमी के विधिवत संचालन के लिए शास्त्री परिषद ने उप मुख्यमंत्री को पत्र दिया। इस मौके पर शास्त्रि परिषद ने यह भी निर्णय लिया कि प्राकृत सुनील समग्र पर वर्ष भर व्याख्यान, प्राकृत को शास्त्री भाषा घोषित किए जाने पर किए जाएंगे। -**डॉ सुनील जैन संचय**

संक्षिप्त समाचार

आर्यिकारत्न श्री मृदुमति माता जी ससंघ का कुंडलपुर में भव्य मंगल प्रवेश, ध्वजारोहण के साथ सिद्धचक्र महामंडल विधान का शुभारंभ

कुंडलपुर दमोह (विश्व परिवार)। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में समाधिस्थ संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रभावक शिष्या का पूज्य आचार्य श्री समय सागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से उपकाशी हटा नगर में मंगल चातुर्मास सानंद संपन्न होकर आर्यिकारत्न श्री मृदुमति माताजी एवं आर्यिकारत्न श्री निर्णय मति माताजी का ससंघ मंगल विहार कुंडलपुर की ओर हुआ।कुआखेड़ा, बरखेड़ा, पटेरा होकर माताजी का ससंघ कुंडलपुर में मंगल प्रवेश हुआ।गाजे बाजे के साथ आर्यिका संघ की भव्य अगवानी की गई।हटा से कुंडलपुर माताजी के विहार में आदित्य जैन, कमलेश, विपुल जैन अंचल, संदीप, नीरज, तरुण, समकित आदि साथ आये। माताजी ससंघ विद्या भवन पहुंची जहां पर ध्वजारोहण के साथ श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का शुभारंभ हुआ। श्रद्धालु भक्तों द्वारा विधान में सम्मिलित होकर सिद्धों की आराधना की जा रही है। 8 नवंबर से 15 नवंबर 2024 तक आयोजित यह विधान ब्रह्मचारी श्री नरेश भैया जबलपुर के कुशल निर्देशन में, संगीतकार राकेश कुमार जैन की स्वर लहरियों के साथ विधान पुणर्याजक लालचंद जी श्रीमती कल्पना जैन सिंघई परिवार कटनी वधवार वाला परिवार है। सायंकाल भैया जी के प्रवचन, मंगल आरती एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

रायपुर दक्षिण उपनिर्वाचन : मतदाता जागरूकता रथ एवं नाटक के माध्यम से मतदाता जागरूकता कार्यक्रम

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव कुमार सिंह के नेतृत्व तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एवं नोडल अधिकारी स्विप श्री विश्वदीप के मार्गदर्शन में रायपुर दक्षिण विधानसभा में होने वाले उपचुनाव में इस क्षेत्र के मतदाताओं को निष्पक्ष व निर्भीक होकर शत प्रतिशत मतदान करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत मतदाता जागरूकता रथ के माध्यम से लोगों को प्रेरक संदेश दिया जा रहा है। इसके साथ-साथ रायपुर दक्षिण क्षेत्र के शैक्षणिक संस्थानों में कालेज तथा दल द्वारा गीत वाला गुना टीका के माध्यम से 18 वर्ष से अधिक आयु के विद्यार्थियों को वोट देने तथा 18 वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों को अपने पालकों को 13 नवंबर को मतदान करने जाने हेतु आग्रह करने का संदेश रोचक तरीके से दिया जा रहा है। स्कूल कॉलेज में विविध रोचक प्रतियोगिताओं के माध्यम से भी मतदाता जागरूकता हेतु विविध गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इनमें नवीन मतदाता तथा भावी मतदाता रुचि के साथ भाग ले रहे है तथा लोकतंत्र को मजबूत बनाने की प्रक्रिया में सकरी सहभागिता सुनिश्चित कर रहे हैं। आयोजन के बाद मतदान के लिए शपथ दिलाई जा रही है।

विवेकानंद नगर में पंचाह्निका महोत्सव के प्रथम दिन 18 हजार गुरुओं की हुई वंदनावली

आत्मोल्लास चातुर्मास 2024

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री संभवनाथ जैन मंदिर विवेकानंद नगर में जारी आत्मोल्लास चातुर्मास 2024 में 8 नवंबर से पंचाह्निका महोत्सव भक्तिमय वातावरण में शुरू हो गया है। मुनिश्री जयपाल विजयजी म.सा., मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म. सा, मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी म. सा, साध्वी रत्ननिधिश्रीजी म.सा, साध्वी रिद्धिनिधि श्रीजी म.सा आदि ठाणा के शुभ सानिध्य में 12 नवंबर तक पंचाह्निका महोत्सव आयोजित होगा। महोत्सव के प्रथम दिन 18 हजार गुरुवन्दनावली का कार्यक्रम हुआ।

22वें तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ : के भाई कृष्ण वासुदेव को जब ज्ञात हुआ कि उनके भाई तीर्थंकर बन गए हैं तो उन्हें वंदना करने गए। नेमीनाथ भगवान के 18000 शिष्यों को उन्होंने वंदन किया, उसी के निमित्त आज महोत्सव के प्रथम दिन 18000 गुरुओं का वंदन किया गया। गुरु गौतम स्वामी से लेकर 18 गुरुओं की महिमा का व्याख्यान करते हुए उन्हें सविधि वंदन किया गया। इसी तरह सभी गुरुओं की महिमा का वर्णन करते हुए सविधि वंदन किया गया। इस अवसर पर लाभार्थी परिवार द्वारा सभी गुरुओं को रजत अक्षत से बधाया गया एवं गुरु पूजन किया गया। अहमदाबाद से आए गीतकार हर्षिल शाह ने संगीतमय प्रस्तुति से गुरुओं की महिमा का वर्णन भजन के द्वारा किया। मुनिश्री प्रियदर्शी विजयजी म.सा. एवं मुनिश्री तीर्थप्रेम विजयजी म.सा. ने गुरुओं की महिमा का व्याख्यान किया। 9 नवंबर को गुरु पादुका पूजन सप्तर्षि वंदना हर्षिल शाह के संगीतमय कार्यक्रम के साथ होगी।

शास्त्रि-परिषद द्वारा प्रो. ऋषभचंद्र फौजदार का अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित किया जाएगा

किशनगढ़/राजस्थान (विश्व परिवार)। राजस्थान। प्राकृतविद्या एवं जैनदर्शन के मूर्धन्य मनीषी प्रोफेसर ऋषभचंद्र जैन अधिष्ठाता मानविकी एवं कला संकाय एकलव्य विश्वद्यालय दमोह द्वारा दिए गए उल्लेखनीय अवदान के लिए उनका अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित कर भव्य अभिनंदन करने का निर्णय अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद ने लिया है, इसका निर्णय जयपुर में सम्पन्न कार्यकारणी की बैठक में सर्व सम्मति से लिया गया।

आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज के सान्निध्य में हुई घोषणा

किशनगढ़ राजस्थान में परम पूज्य आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज को 29 अक्टूबर 2024 को श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस मौके पर प्रोफेसर ऋषभचंद्र जैन दमोह ने अचार्यश्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया वहीं परिषद के अध्यक्ष डॉ श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, उपाध्यक्ष डॉ नरेन्द्र कुमार जैन टीकमगढ़, पंडित विनोद कुमार जैन रजवांस, पंडित जयंत जैन सीकर, प्रचारमंत्री डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर आदि ने भी अचार्यश्री को श्रीफल समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

-**डॉ. सुनील जैन संचय**

रायपुर दक्षिण विधानसभा उप निर्वाचन : मतदान से एक दिन पहले और मतदान दिवस के दिन प्रकाशित होने वाले राजनैतिक विज्ञापनों का प्रमाणन जरूरी

प्रकाशन तिथि से तीन दिन पहले एमसीएमसी को देना होगा आवेदन

रायपुर (विश्व परिवार)। सभी राजनैतिक दलों, रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के लिए उप निर्वाचन लड़ने वाले सभी प्रत्याशियों को भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देश अनुसार मतदान दिवस एवं मतदान से एक दिन पूर्व मीडिया में प्रकाशित होने वाले राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों के विज्ञापनों का प्रमाणन मीडिया प्रमाणन एवं निगरानी समिति (एमसीएमसी) से अनिवार्य रूप से कराना होगा। इस संबंध में जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने जरूरी निर्देश भी जारी किए है।

रायपुर दक्षिण विधानसभा उप निर्वाचन में 13 नवम्बर बुधवार को वोट डाले जाएंगे, इसे देखते हुए 12 व 13 नवम्बर को प्रिंट मीडिया में प्रकाशित किए जाने वाले ऐसे तमाम राजनीतिक विज्ञापनों को राज्य स्तर या जिला पर गठित प्रमाणन व मीडिया निगरानी समिति (एमसीएमसी) से पूर्व-प्रमाणीकरण कराना अनिवार्य है। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी किए गए है। इन दोनों दिन राजनीतिक लाभ लेने व मतयाचना के लिए राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों द्वारा समाचार-पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कराया जाता है।

भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार राज्य स्तर पर एक राज्य स्तरीय एमसीएमसी कमेटी मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय द्वारा गठित की गई है, राज्य स्तरीय कमेटी में राजनीतिक दलों द्वारा प्रकाशित कराये जाने वाले राजनीतिक विज्ञापनों का प्रमाणीकरण कराया जा सकता है, इसके साथ ही हर जिले में जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा जिला स्तर पर एमसीएमसी कमेटी गठित है। विधानसभा उप निर्वाचन लड़ने वाले प्रत्याशी अपने राजनीतिक विज्ञापनों को जिला स्तरीय समिति से प्रमाणीकरण करा सकते हैं। इसके लिए प्रत्याशियों को विज्ञापन प्रकाशन की प्रस्तावित तिथि से 3 दिन पहले तक विज्ञापन के प्रारूप की तीन प्रतियों के साथ निर्धारित प्रपत्र में आवेदन प्रस्तुत करना होगा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मीडिया प्रमाणन का मूल आधार आदर्श आचार संहिता के पालन से जुड़ा है। मीडिया में ऐसा कोई विज्ञापन नहीं दिया जाएगा जो सामाजिक समरसता को बिगाड़ने अथवा तनाव को बढ़ाने, शांति भंग करने, संविधान और कानून के विपरीत, नैतिकता, सदाचार के विपरीत हो। किसी की धार्मिक आस्था को ठेस पहुंचाने वाले विज्ञापनों के प्रकाशन पर भी रोक रहेगी। कलेक्टर ने बताया कि मतदान के दिन और मतदान से एक दिन पहले मीडिया में प्रकाशित होने वाले राजनैतिक विज्ञापन का समिति द्वारा प्रमाणन कराया जाना आवश्यक है। इन विज्ञापनों में प्रिंट मीडिया, टीवी चैनल, केबल टीवी चैनल, रेडियो (निजी एफएम सहित), सिनेमा घर, ई-समाचार पत्र, बल्क एवं वाईस एसएमएस एवं सार्वजनिक स्थलों पर दृश्य-श्रव्य माध्यम शामिल है।

राम जानकी पारा में 9 दिवसीय श्री शिव महापुराण कथा का आयोजन

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। कार्तिक मास के पावन अवसर पर श्री राम जानकी पारा दुर्गा मंच पर 9 दिवसीय श्री शिव महापुराण कथा का आयोजन श्री कुलेश्वर रामायण मंडली नवापारा द्वारा किया जा रहा है।श्री शिव महापुराण कथा का कथा वाचक आचार्य पंडित भूपेंद्रधर दीवान श्री धाम पंचकोशी धाम फिंगेश्वर वाले के सानिध्य में 7 नवंबर गुरुवार से 15 नवंबर शुक्रवार तक अपरान्ह 1:00 से संध्या 5:00 बजे तक अनवरत जारी है।गुरुवार 7 नवंबर को कलश यात्रा महात्मा कथा से शुरू हुई जो कि 8 नवंबर शुक्रवार को बिल्व पत्र,भस्म,रूद्राक्ष महिमा, शनिवार 9 नवंबर को सती चरित्र,10 को शिव पार्वती विवाह 11 को कार्तिकेय गणेश चरित्र,12 को बाणासुर चरित्र,13 को उमा संहिता,देवी महिमा,14 को द्वादश ज्योतिर्लिंग महिमा एवं 15 नवंबर शुक्रवार को कथासार पूर्णहुती एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम संपन्न होगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के अन्नपूर्णा देवांगन, राजबाई साहू,शांताबाई तारक, अन्नपूर्णा कंसारी,सरोजनी सोनी, संतोषी देवांगन,मीना बाई देवांगन सहित दुर्गा उत्सव समिति एवं गणेश उत्सव समिति के सदस्य लगे हुए हैं।

इस अवसर पर वार्ड सहित नगर के सैकड़ो भक्तगण ने कथा का श्रवण कर रहे हैं।कुलेश्वर रामायण मंडली के द्वारा आयोजित उक्त कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कथा का पुण्य लाभ लेने की अपील की है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर, शनिवार 09 नवंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

जहरखुरानी, मां के बाद मासूम की भी हुई मौत

बालोद(विश्व परिवार)। जिले में 9 दिन तक इलाज के बाद सात वर्षीय जागेंद्र भी जिंदगी की जंग हार गया। लिवर और किडनी में जहर के असर से उसका स्वास्थ्य गंभीर रूप से प्रभावित हुआ, जिसके कारण उसे संक्रमण हो गया और इलाज के बावजूद उसकी मौत हो गई। वहीं, उसकी 4 वर्षीय बहन की हालत में सुधार बताया जा रहा है। मां डुमेश्वरी साहू के बाद बेटे की मौत से परिवार में मातम पसर गया। घटना 28 अक्टूबर की है, जब अर्जुन्दा थाना क्षेत्र के ग्राम कुरदी में घरेलू विवाद से परेशान होकर डुमेश्वरी साहू ने अपने दोनों बच्चों को कीटनाशक दवाई पिला दी थी और खुद भी कीटनाशक का सेवन कर लिया था। इसके बाद तीनों को गंभीर हालत में अर्जुन्दा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां से उन्हें राजनांदगांव मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। इलाज के दौरान 29 अक्टूबर की रात डुमेश्वरी की मौत हो गई। दोनों बच्चों को गंभीर स्थिति में रायपुर एम्स भेजा गया, जहां उनका इलाज चल रहा था। बुधवार को सात वर्षीय जागेंद्र की मौत हो गई, जबकि उसकी 4 वर्षीय बहन की स्थिति स्थिर बताई जा रही है और उसका इलाज जारी है। यह खौफनाक कदम घरेलू विवाद के चलते उठाया गया था, जिसकी वजह से एक खुशहाल परिवार पूरी तरह से टूट गया। 4 वर्षीय बच्ची अब खतरे से बाहर है, लेकिन उसके भाई और मां की मौत से परिवार में शोक की लहर है।

सोलर नल जल प्रदाय योजना : ग्राम कामरभौदी में पहुंचा हर घर जल

गरियाबंद(विश्व परिवार)। गरियाबंद विकासखण्ड के दूरस्थ वनांचल ग्राम पंचायत डुमरबाहरा के आश्रित ग्राम कामरभौदी जिला मुख्यालय से लगभग 54 कि.मी. दूरी पर स्थित है। यह गांव पहाड़ एवं घने जंगलो से घिरा हुआ है। ग्राम कामरभौदी अतिसंवेदनशील क्षेत्र होने एवं विकट भौगोलिक स्थिति होने के कारण लोगों को विकास से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता था। जिला प्रशासन की ओर से लोगों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए गांव में सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। इसी तारतम्य में गांव में सोलर माध्यम से नलजल प्रदाय योजना संचालित किया जा रहा है। इसके माध्यम से लोगों को घर में ही पीने का पानी मिलने लगा है। इससे ग्रामीणजन लाभान्वित हो रहे है। कामरभौदी मुख्यत: आदिवासी ग्राम है, यहा लगभग 400 लोग निवास करते है। इस गांव में कुल घरों की संख्या 94 है। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा जल जीवन मिशन योजना अंतर्गत कुल 02 नग 6 मी. स्टेजिंग सोलर और 01 जीआई 12 मी. स्टेजिंग सोलर 5000 लीटर की 02 टंकी से पानी सप्लाई किया जा रहा है। गांव में पेयजल हेतु लोग पहले नदी, तालाब, झरिया और शासकीय हैण्ड पंप पर निर्भर हुआ करते थे। कमार पारा, भोरीपारा, कामरभौदी एवं तुहापानी चार अलग अलग पारा ग्राम में है। नलजल कनेक्शन पहुंचने से गांव में आंगनबाड़ी, शासकीय शाला में अध्ययनरत बच्चो को मध्यान भोजन हेतु पेयजल प्राप्त हो रहा है। पहले पारंपरिक तौर पर पीने के पानी को कपड़े की छन्नी से छान कर मटकी गुंडी आदि में संग्रहित कर आवश्यकतानुसार खाना बनाने और पीने के लिए उपयोग करते थे। ग्रामीण पीने का पानी का शुद्धता का माप पानी के मटमैला रंग को देखकर किया करते थे। लेकिन अब जल जीवन मिशन के माध्यम से हर घर जल पहुंचाया जा रहा है।

कलेक्टर ने धान खरीदी की तैयारी की समीक्षा की

अम्बिकापुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर विलास भोसकर की अध्यक्षता में बुधवार को समय सीमा की बैठक आयोजित हुई। बैठक में कलेक्टर ने धान खरीदी की तैयारियों की समीक्षा करते हुए कहा कि आगामी महीनों में धान खरीदी हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। इस कार्य में किसी तरह की लापरवाही ना हो, इसका कड़ाई से ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि धान उपार्जन केंद्रों में निरीक्षण हेतु जिसे नोडल अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है, वे सभी अपने दायित्वों को गंभीरता से निभाएं। 14 नवंबर से धान खरीदी शुरू होगी, जो 31 जनवरी 2025 तक की जाएगी। धान खरीदी केंद्रों में धान खरीदी अवधि, शासन द्वारा निर्धारित गुणवत्ता, समर्थन मूल्य, बायोमेट्रिक धान खरीदी, खाद्य विभाग के टोल फ्री नंबर, टोकन की जानकारी सहित समस्त जानकारी के दीवार लेखन के साथ ही धान खरीदी केंद्रों में स्थल की सफाई, कांटा बाट अथवा इलेक्ट्रॉनिक कांटा का सत्यापन, कैप कवर, बारदाने की व्यवस्था, हमालों की व्यवस्था, डनेज व्यवस्था, छाया, पेयजल जैसी समस्त व्यवस्थाएं उपलब्ध रहें। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि सभी राजस्व अधिकारी शासकीय भूमि के अतिक्रमण के मामलों और फ़र्ज़ी हस्ताक्षरित आदेशों से सतर्क रहें और किसी तरह का संदेह होते ही तत्काल उसकी पुष्टि की कार्यवाही करें। इसी तरह उन्होंने बैठक में शासन के निर्देशनुसार अनुकंपा नियुक्ति के प्रकरणों के निराकरण और स्कूलों बच्चों के जाति प्रमाण पत्र बनाए जाने की प्रगति की जानकारी ली।

कलेक्टर ने बस्तर ओलंपिक की तैयारी संबंधी बैठक में दिए आवश्यक निर्देश

नारायणपुर(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन खेल एवं युवा कल्याण विभाग के निर्देशानुसार जिले में बस्तर ओलंपिक का आयोजन किया जाना है। विकासखण्ड स्तरीय बस्तर ओलंपिक 2024 खेल प्रतियोगिता विकासखण्ड नारायणपुर के प्रतिभागियों के लिए 09 से 11 नवम्बर तक एवं विकासखण्ड ओरछा के प्रतिभागियों के लिए 14 से 16 नवंबर तक जिला मुख्यालय नारायणपुर के क्रीड़ा परिसर मैदान परेड ग्राउंड, ऑफिसर्स क्लब, विश्वदीप्ती स्कूल बंगलापारा, फुटबाल ग्राउंड बंगलापारा में आयोजित किया जाएगा। उक्त आयोजन में खिलाड़ियों की सुविधा हेतु विकासखण्ड स्तरीय बस्तर ओलंपिक आयोजन हेतु अलग अलग तिथियां निर्धारित की गई है, जिसमें बस्तर ओलंपिक 2024 हेतु ऑनलाईन ऑफलाईन माध्यम से पंजीकृत खिलाड़ी सम्मिलित होंगे। कलेक्टर बिपिन मांझी ने बस्तर ओलंपिक 2024 के सफल संचालन हेतु जिला कार्यालय में जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होंने अधिकारियों को सौंपी गई जिम्मेदारियों को सफलतापूर्वक सहभागिता देने निर्देशित किया। उन्होंने मैदानों की तैयारियां, छाया पेयजल, खिलाड़ियों को ठहराने, परिवहन व्यवस्था, भोजन नाश्ता, जर्सी ट्रेकसू आदि व्यवस्थाओं की जानकारी लिया। उन्होंने स्वास्थ्य अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि मैदान में खेल के दौरान खिलाड़ियों को किसी प्रकार की स्वास्थ्य खराब होने पर उसकी उपचार के लिए स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देशित किये। जिला स्तरीय आयोजन 19 से 21 नंबवर 2024 की तिथि निर्धारित की गई है। आयोजन के दौरान आवश्यक व्यवस्थाओं हेतु खिलाड़ियों तक आयोजन तिथि की सूचना प्रसारित करने एवं आयोजन स्थल में उपस्थित करना एवं वापिस ले जाने की जिम्मेदारी मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जनपद पंचायत नारायणपुर एवं ओरछा तथा समन्वय हेतु सहायक आयुक्त आदिवासी विकास एवं जिला शिक्षा अधिकारी को सौंपा गया है। भोजन एवं स्वल्पाहार व्यवस्था मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत नारायणपुर एवं ओरछा तथा समन्वय हेतु जिला खाद्य अधिकारी, आवास व्यवस्था सहायक आयुक्त अदिवासी विकास विभाग एवं जिला शिक्षा अधिकारी, टेंट एवं संबंधित अन्य व्यवस्था मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत नारायणपुर एवं ओरछा, जिला खेल अधिकारी खेल एवं युवा कल्याण विभाग, खेल मैदान की तैयारी सहायक जिला क्रीड़ा अधिकारी एवं जिला शिक्षा कार्यालय तथा जिला खेल अधिकारी खेल एवं युवा कल्याण विभाग, खिलाड़ियों का खेल प्रतियोगिता के लिए उपस्थिति, फिक्सर तैयार करना, खेल प्रतियोगिता का आयोजन कराना, दस्तावेजों का संधारण हेतु पर्याप्त कर्मचारियों का ड्यूटी लगाना एवं समन्वय कराना खण्ड शिक्षा अधिकारी विकासखण्ड नारायणपुर एवं ओरछा, जिला शिक्षा अधिकारी, खेल अधिकारी खेल एवं युवा कल्याण विभाग, प्रतियोगिता विभिन्न स्थानों में आयोजित होगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की आतंकवाद के खिलाफ 'जीरो टॉलेरेंस' की नीति को पूरे विश्व ने स्वीकारा

रायपुर। साल 2014 में जिस समय देश की कमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संभाली थी। उस समय उन्होंने यह बात जग जाहिर कर दी थी कि, भारत देश अब आतंकवाद के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति पर आगे बढ़ेगा। आतंकवाद से समझौता नहीं, आतंकवादियों का हिसाब होगा। इन 10 वर्षों में आतंकवाद के खिलाफभाजपा सरकार ने एक मजबूत इकोसिस्टम तैयार कर इस समस्या को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए अनेकों योजनाएं भी तैयार की है।

इस कड़ी में आतंकवाद विरोधी सम्मेलन-2024 के उद्घाटन सत्र में पहुंच कर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने एक ओर एनआईए की पूरी टीम को बधाई दी तो, दूसरी ओर उन्होंने 75 सालों में देश की आंतरिक सुरक्षा और सीमाओं की सुरक्षा को बनाए रखने के लिए शहीद हुए 36,468 पुलिसकर्मियों को भी याद किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि, 'बीते 10 सालों से मोदी जी के नेतृत्व में आतंकवाद के खिलाफ भारत सरकार मोदी जी के नेतृत्व में एक ठोस रणनीति लेकर चल रही है। मोदी जी की इस नीति को आज पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है।'

बीते 10 साल में एक ओर जहाँ आतंकवाद पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह का सख्त रवैया देखने को मिला है। वहीं टेररिज्म के साथ ही नारकोटिक्स के खिलाफ आज हमारे देश में एक मजबूत इकोसिस्टम बनकर तैयार हुआ है। जिसका लोहा पूरी दुनिया मान रही है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व के बादौलत आज जहाँ आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में शामिल एजेंसियों को कानूनी रूप से मजबूती मिली है। वहीं एनआईए एक्ट में संसोधिन भी किया गया है। जिसमें नए अपराध जोड़े गए हैं साथ ही एक्स्ट्रा टेरिटोरियल क्षेत्राधिकार भी दिया गया है। आज एनआईए आतंकवाद खिलाफ जाँच करने के लिए विदेश में भी जा सकती है।

कलेक्टर दीपक अग्रवाल ने उप स्वास्थ्य केंद्र और आंगनबाड़ी केंद्र का किया निरीक्षण

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक अग्रवाल आज विकासखंड मैनपुर के ग्राम कुचेंगा पहुंचकर उप स्वास्थ्य केंद्र और आंगनबाड़ी केंद्र का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्र में पहुंचकर छोटे बच्चों के पढ़ने, खेलने और खाने की सुविधाओं का जायजा लिया। इस दौरान कलेक्टर ने स्नेहभाव से बच्चों से उनका नाम पुछा और आंगनबाड़ी में खाने और पढ़ने के लिए उपलब्ध चीजों के बारे में जानकारी ली। बच्चों ने भी बड़ी ही मासूमियत और चहकते हुए कलेक्टर को अपना नाम बताया, साथ ही प्रतिदिन उपलब्ध भोजन की जानकारी दी। इस दौरान कलेक्टर ने आंगनबाड़ी केंद्र के माध्यम से वितरित किए जाने वाले पूरक पोषण आहारों के बारे में जानकारी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता से ली। बच्चों, गर्भवती - शिशुवती महिलाओं तथा कुपोषण स्तर की जानकारी लेकर नियमित पौष्टिक आहार का वितरण सुनिश्चित करने के निर्देश कार्यकर्ता को दिए। इसी प्रकार कलेक्टर अग्रवाल ने कुचेंगा में स्थित उप स्वास्थ्य केंद्र में पहुंचकर स्वास्थ्य सुविधाओं का भी जायजा लिया। उन्होंने स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों के इलाज के लिए सुनिश्चित की गई व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। कलेक्टर ने गांव के सभी लोगों के आयुष्मान स्वास्थ्य कार्ड निर्माण की जानकारी लेकर छूटे हुए सभी लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाने तथा उसका स्वास्थ्य पोर्टल में ऑनलाइन एंट्री करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। इस दौरान कलेक्टर अग्रवाल ने स्वास्थ्य केंद्र के माध्यम से संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय होकर काम करने के निर्देश केंद्र प्रभारी को दिए।

कलेक्टर ने कुचेंगा पहुंचकर उप स्वास्थ्य केंद्र और आंगनबाड़ी केंद्र का किया औचक निरीक्षण

गरियाबंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर दीपक अग्रवाल आज विकासखंड मैनपुर के ग्राम कुचेंगा पहुंचकर उप स्वास्थ्य केंद्र और आंगनबाड़ी केंद्र का औचक निरीक्षण किया।उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्र में पहुंचकर छोटे बच्चों के पढ़ने, खेलने और खाने की सुविधाओं का जायजा लिया। इस दौरान कलेक्टर ने स्नेहभाव से बच्चों से उनका नाम पुछा और आंगनबाड़ी में खाने और पढ़ने के लिए उपलब्ध चीजों के बारे में जानकारी ली।बच्चों ने भी बड़ी ही मासूमियत और चहकते हुए कलेक्टर को अपना नाम बताया, साथ ही प्रतिदिन उपलब्ध भोजन की जानकारी दी।इस दौरान कलेक्टर ने आंगनबाड़ी केंद्र के माध्यम से वितरित किए जाने वाले पूरक पोषण आहारों के बारे में जानकारी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता से ली।उन्होंने बच्चों, गर्भवती शिशुवती महिलाओं तथा कुपोषण स्तर की जानकारी लेकर नियमित पौष्टिक आहार का वितरण सुनिश्चित करने के निर्देश कार्यकर्ता को दिए। इसी प्रकार कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कुचेंगा में स्थित उप स्वास्थ्य केंद्र में पहुंचकर स्वास्थ्य सुविधाओं का भी जायजा लिया। उन्होंने स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों के इलाज के लिए सुनिश्चित की गई व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। कलेक्टर ने गांव के सभी लोगों के आयुष्मान स्वास्थ्य कार्ड निर्माण की जानकारी लेकर छूटे हुए सभी लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाने तथा उसका स्वास्थ्य पोर्टल में ऑनलाइन एंट्री करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। इस दौरान कलेक्टर श्री अग्रवाल ने स्वास्थ्य केंद्र के माध्यम से संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय होकर काम करने के निर्देश केंद्र प्रभारी को दिए।

मुंगेली एसपी हुए कोटवारों के सम्मेलन व साइबर वर्कशाप कार्यक्रम में शामिल

कोटवार सम्मेलन में कोटवारों को सूचना मितान के नाम से किया गया संबोधित

मुंगेली(विश्व परिवार)। जिले में कानून व्यवस्था एवं आगामी पंचायत चुनाव के मद्देनज़र आज लोरमी विकासखंड में लोरमी कबीर भवन में मोर पहचान मोर सम्मान के बैनर तले कोटवारों का एक सम्मेलन और वर्कशॉप आयोजित किया गया जिसमें कोटवारों को पुलिस और जिला प्रशासन से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के संबंध में बताया व महत्वपूर्ण जानकारी दी साथ ही पुलिस और प्रशासन का सक्रिय सहयोग करने के लिए बताया गया पुलिस अधीक्षक भोजराम पटेल ने कोटवारों को उनके अधिकार ग्रामो में होने वाली अवैध गतिविधियों जिनमे अवैध शराब,जुआ,सट्टा आदि व अन्य अपराधिक गतिविधियों में शामिल असामाजिक तत्वों के बारे में गोपनीय रूप से जानकारी देने और ऐसे लोगो पर निगरानी रखने को निर्देशित किया व साइबर फ्रॉड के संबंध में आवश्यक जानकारी प्रदान की और फ्रॉड से बचने के तरीकों व जानकारी संबंधित पोस्टर और पाम्पलेट वितरित किया ताकि वे अपने गाँव मे जाकर मुनादी कर ग्रामीणों को भी साइबर फ्रॉड के संबंध में जागरूक कर सके और प्रमुख चौक चैराहो पर पाम्पलेट और बैनर चस्पा करें।और बताया कि एक जिला स्तरीय वॉट्सएप ग्रुप बनाया गया है जिसमे जिले के सभी कोटवारो को जोड़ा जा रहा है आप सभी जुड़े और किसी भी प्रकार की समस्या होने पर तत्काल संबंधित थाना प्रभारी और वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराने कहा उक्त कार्यक्रम में जिला पंचायत सीईओ प्रभाकर पाण्डेय, जिला वनमंडलाधिकारी संजय यादव अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नवनीत कौर एसडीओपी माधुरी डीहरी एसडीएम लोरमी थाना प्रभारी आदि उपस्थित रहे।

भारत का पहला वैश्विक भैरव अष्टमी महोत्सव 15 नवंबर से

84,000 वर्ग फीट की रंगोली, 2024 प्रकार की मिठाईयों का गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

रायपुर। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने की दिशा में अखिल भारतीय बटुक भैरव भक्त मंडल, राष्ट्र संत डॉ. वसंत विजय जी महाराज, जो कि पार्श्व पद्मावती शक्ति पीठ धाम, कृष्णगिरि, तमिलनाडु के पीठाधीश्वर हैं, के नेतृत्व में 15 नवंबर से 23 नवंबर तक नौ दिवसीय भव्य भैरव अष्टमी महोत्सव का आयोजन कर रहा है। यह आयोजन मध्य प्रदेश के नीमच स्थित दशहरा मैदान में होगा और भक्ति तथा सांस्कृतिक धरोहर का अनूठा संगम प्रस्तुत करेगा। डॉ. वसंत विजय जी महाराज के अनुसार भैरव अष्टमी पर आयोजित कष्ट हरण महायज्ञ और कथा साधना का विशेष महत्व है। इसका उद्देश्य देश को संभावित आर्थिक संकट और महामारी से बचाना है। यह यज्ञ न केवल देश की सुख-समृद्धि और शांति के लिए किया जाएगा, बल्कि भक्तों के लिए भक्ति और आस्था का प्रकाश भी प्रसारित करेगा।

27 राज्यों और 12 देशों से आने वाले भक्तों की उपस्थिति में इस महोत्सव का मुख्य आकर्षण 84,000 वर्ग फीट की रंगोली होगी, जो लगभग 2 एकड़ में फैली होगी। यह रंगोली प्रमुख आध्यात्मिक गुरुओं और राष्ट्रीय नायकों के चित्रों से सजी होगी, जो भारत की सामाजिक समरसता, एकता, और आतंकवाद के खिलाफ अडिग संकल्प का प्रतीक होगी। यह आयोजन भारतीय कला और संस्कृति की समृद्धि को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करेगा और 50 से अधिक प्रतिष्ठित विश्व रिकॉर्ड संस्थानों में दर्ज होने का प्रयास करेगा। इस महत्वाकांक्षी पहल का उद्देश्य भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करना और देश की वैश्विक पहचान को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाना है। इस कार्यक्रम की एक और विशेषता रहेगी, भैरव देव को अर्पित की जाने वाली 2024 प्रकार की दिव्य मिठाइयाँ। पूरे कार्यक्रम के दौरान अष्ट कुंडीय महायज्ञ, कथा, और भक्तों के लिए भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था की गई है। यज्ञ में 46 विद्वान पंडित हिस्सा लेंगे, जिनमें मुख्य कुंड में 11 पंडित और शेष सात कुंडों में 5-5 पंडित 9 दिन तक निरंतर यज्ञ करेंगे। भक्तजन निरूशुल्क पंजीकरण कर इस आयोजन का हिस्सा बन सकते हैं।

इस महोत्सव में मध्य प्रदेश के उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, सांसद सी. पी. जोशी और सुधीर गुप्ता, राज्यसभा सांसद बंशीलाल गुर्जर, और विभिन्न राज्य विधायकों व अधिकारियों की भागीदारी भी रहेगी। देश-विदेश से 50 से अधिक विविध संस्थाएं 2024 प्रकार की मिठाइयों के अर्पण और रंगोली के विश्व रिकॉर्ड में भाग लेंगी। डॉ. वसंत विजय जी महाराज के पावन सानिध्य और उनके मुखारविंद से कथा के साथ इस अद्वितीय आयोजन का समापन होगा। यह महोत्सव भक्ति और आराधना का अप्रतिम उदाहरण बनेगा। यह ऐतिहासिक आयोजन भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, एकता और अखंडता को दर्शाएगा और दुनिया भर से भक्तों को इस अद्वितीय भक्ति और उत्सव के अनुभव का हिस्सा बनने के लिए आकर्षित करेगा। कार्यक्रम के दौरान सभी भक्तों के लिए भोजन और अन्य सेवाओं की निरूशुल्क व्यवस्था की जाएगी।

व्यापार समाचार

रुपया गिरावट के सारे रिकॉर्ड तोड़कर रसातल में गिरा

मुंबई(एजेंसी)। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारतीय रुपये की गिरावट थमने का नाम नहीं ले रही है. आज डॉलर के मुकाबले रुपया 84.30 रुपये प्रति डॉलर तक गिर गया है जो इसका ऐतिहासिक निचला स्तर है. फॉरेन पोर्टफोलियो इंवेस्टर्स (स्नक्क्) की भारतीय बाजार में लगातार बिकवाली और फंड आउटफ्लो के बाद एक और कारण है जिससे भारतीय रुपये के रसातल में जाने का सिलसिला जारी रहने की आशंका है. दरअसल अमेरिकी चुनावों में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद आने वाले महीनों में अमेरिकी करेंसी डॉलर के और चढ़ने का अनुमान है. ऐसा हुआ तो भारतीय रुपये के लिए नीचे जाने का डर लगातार बना रहेगा और ये अधिक निचले लेवल तक गिर सकता है. बुधवार को रुपये में लाइफटाइम निचले स्तर पर कारोबार बंद हुआ और ये डॉलर के मुकाबले 84.28 के लेवल पर बंद हो पाया है. करेंसी जानकारों के मुताबिक ट्रंप के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद टैक्स में कटौती और डीरेगुलेशन के बाद आम तौर पर अमेरिकी ग्रोथ में खासी बढ़ोतरी देखी जाने का उम्मीद है. इसके चलते विश्व की अन्य करेंसी के मुकाबले डॉलर की कीमतें ऊंची होंगी और विदेशी निवेशक डॉलर को तरजीह देंगे. इसके अलावा टैरिफ हाईक से लेकर ड्यूटी बढ़ने के असर से यूरो और दूसरी एशियाई करेंसी के भी नीचे आने की संभावना है जिसके बाद भारतीय रुपये के लिए भी संकट बढ़ने की आशंका है. आज डॉलर इंडेक्स में हालांकि गिरावट देखी जा रही है जिसके चलते ये 0.1 फीसदी गिरकर 104.9 के लेवल पर आ गया है. डॉलर इंडेक्स वो इंडेक्स है जो दुनिया की 6 करेंसी के मुकाबले डॉलर की मजबूती को दिखाता है. ये इंडेक्स बुधवार को 105.12 पर आ गया था जो इसका चार महीने का उच्च स्तर है. रुपये की कमजोरी के साथ भारत के लिए नई परेशानियों के दरवाजे खुलने का डर रहता है. डॉलर के मजबूत होने का मतलब है कि सीधा-सीधा भारत का इंपोर्ट बिल बढ़ जाएगा. उदाहरण के लिए जिस सामान को खरीदने पर अक्टूबर में 1 डॉलर के लिए 83 रुपये देने होते थे वहीं अब ये रकम 84.30 रुपये की हो जाएगी. भारत विदेशों से सबसे ज्यादा कच्चा तेल आयात करता है और इसको खरीदने के लिए ज्यादा राशि खर्च करनी पड़ेगी क्योंकि डॉलर महंगा हो गया है.

Lexlegis.ai प्रस्तुत करता है इंटरैक्ट: कानूनी दस्तावेज़ों के प्रबंधन के लिए एक परिवर्तनकारी ए.आई. समाधान

मुंबई: विधिक टेक्नोलॉजी और लार्ज लैंग्वेज मॉडल्स (एल.एल.एम.) में सबसे आगे, Lexlegis.ai ने परिवर्तनकारी सुविधा, इंटरैक्ट के पेशकश की घोषणा कर दी है, जिसे कानूनी व्यावसायियों द्वारा दस्तावेज़ की कार्य-प्रणाली का प्रबंधन, विश्लेषण और उन्हें अनुकूलित करने के तरीके को बदलने के लिए तैयार किया गया है। एक शक्तिशाली लीगल सर्च टूल के रूप में Lexlegis.ai की प्रतिष्ठा पर आधारित, इंटरैक्ट कानूनी प्रक्रियाओं को और भी अधिक सुचारु, तेज़ और अधिक कुशल बनाने के लिए ए.आई.-आधारित क्षमताओं को एकीकृत करते हुए इस प्लैटफ़ॉर्म के विकास को केस प्रबंधन के एक संपूर्ण समाधान के रूप में प्रदर्शित करता है। दस्तावेज़ों की तुलना, विश्लेषण और अंतर्दृष्टि के प्रासिकरण के लिए कुशल उपकरणों के साथ कानूनी व्यावसायियों को सशक्त बनाने की इसकी क्षमता इंटरैक्ट का मुख्य आधार है। एकल, इंट्यूइटिव इंटरफ़ेस के साथ, इसका उपयोग करने वाले अब ये कार्य कर सकते हैं:

- कानूनी दस्तावेज़ों की तुलना करना: अंतरों की पहचान करने और संगतता को सुनिश्चित करने के लिए अनुबंधों, करारों या केस की फाइलों की सहजता से तुलना करना।
- महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करना: लंबे कानूनी दस्तावेज़ों से महत्वपूर्ण विवरण प्राप्त करने या पी.डी.एफ और चित्रों से लिखित सामग्री को स्कैन करने के लिए ए.आई. का लाभ उठाना, जिससे स्वयं ढूँढने के प्रयास न करने पड़ें।
- दस्तावेज़ों का अनुवाद: कानूनी विषय-सामग्री को स्वचालित रूप से विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करना, जिससे सीमा पार के मामलों और सहयोगों को सुविधाजनक बनाया जा सके।
- जोखिम का विश्लेषण: दस्तावेज़ों के भीतर संभावित जोखिमों या विसंगतियों की तुरंत पहचान करना, जिससे निर्णय लेने में बेहतर सहायता मिलती है।

Lexlegis.ai के संस्थापक, श्री साकार एस. यादव ने कहा, इंटरैक्ट कानूनी दस्तावेज़ों प्रबंधन को अगले स्तर पर ले जाता है।

इसका उद्देश्य केवल शोधकार्य को तेज़ करना नहीं है—बल्कि उन कार्यों को स्वचालित करना है जिनके लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है और जो अक्सर विधिक कार्य-प्रणाली की रफ़्तार को धीमा कर देते हैं, जिससे व्यावसायी महत्वपूर्ण निर्णयों और केस के सर्वश्रेष्ठ परिणामों पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते हैं।

भारत में 5,113 करोड़ रुपये निवेश करेगा डॉयचे बैंक

नई दिल्ली(एजेंसी)। जर्मन ऋणदाता डॉयचे बैंक ने भारत में अपने परिचालन को मजबूत करने के लिए 5,113 करोड़ रुपये की अतिरिक्त पूंजी निवेश करने की घोषणा की है। डॉयचे बैंक के बयान के अनुसार, यह हाल के वर्षों में भारत को दिया गया सबसे बड़ा पूंजी आवंटन है और इसका उपयोग कॉर्पोरेट बैंकिंग, निवेश बैंकिंग और निजी बैंकिंग में कारोबार बढ़ाने के लिए किया जाएगा। भारत में 45 वर्षों से परिचालन कर रहे बैंक ने 31 मार्च, 2024 तक 1.45 लाख करोड़ रुपये की बैलेंस शीट की रिपोर्ट की है। हाल ही में किया गया पूंजी निवेश 2023 के स्तर से 33 की वृद्धि दर्शाता है, जिससे डॉयचे बैंक एजी इंडिया शाखाओं की नियामक पूंजी लगभग 30,000 करोड़ रुपये हो गई है। पिछले एक दशक में यह पूंजी तीन गुना हो गई है। बैंक का ध्यान सप्लाई चेन में बदलाव और डिजिटलीकरण जैसे वैश्विक रुझानों के बीच भारत की अनुकूल स्थिति का लाभ उठाने पर है। एशिया प्रशांत और अन्य क्षेत्रों के सीईओ अलेक्जेंडर वॉन ज़ुर म्यूलेन ने कहा, हम भारत में अपार संभावनाएं देखते हैं। डॉयचे बैंक भारत को तेजी से विकास करता महत्वपूर्ण बाजार मानता है।

ग्राहम थोर्प और मार्टिन क्रो के नाम पर रखी जायेगी इंग्लैंड-न्यूजीलैंड टेस्ट सीरीज

लंदन(एजेंसी)। इंग्लैंड न्यूजीलैंड के साथ टेस्ट सीरीज के लिए एक नई ट्रॉफी का नाम देकर दिग्गज बल्लेबाज ग्राहम थोर्प को सम्मानित करने के लिए तैयार है। इसका नाम थोर्प और न्यूजीलैंड के बल्लेबाज मार्टिन क्रो के नाम पर रखा जाएगा, जो अपने-अपने देशों के दो सबसे प्रतिष्ठित बल्लेबाजों को श्रद्धांजलि है। यह ट्रॉफी इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच टेस्ट सीरीज के विजेता को दी जाएगी, यह मुकाबला 1930 में दोनों देशों के बीच पहली टेस्ट भिड़ंत से जुड़ा है। टेलीग्राफ की रिपोर्ट के अनुसार, 28 नवंबर से शुरू होने वाली आगामी सीरीज में इस पहल के प्रभावी होने की उम्मीद है, जिसका उद्देश्य क्रो और थोर्प की विरासत का सम्मान करना है। क्रो, जिन्हें अक्सर न्यूजीलैंड का सबसे बेहतरीन बल्लेबाज माना जाता है, ने 1982 से 1995 तक 77 टेस्ट मैचों में अपने देश का प्रतिनिधित्व किया, जिसमें 17 शतक और 18 अर्धशतक सहित 45.36 की औसत से रन बनाए। अपने खेल के दिनों के बाद उन्हें एक विचारशील लेखक और कमेंटेटर के रूप में भी जाना जाता था, जो क्रिकेट के महान विचारकों में से एक बन गए। लिम्फोमा से तीन साल की लड़ाई के बाद 2016 में 53 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। क्रो का इंग्लैंड के खिलाफ़ मैचों से एक ख़ास जुड़ाव था, उन्होंने उनके खिलाफ़ 40.6 की औसत से पांच शतक बनाए। 100 टेस्ट के करियर में, थोर्प ने 44.7 का औसत बनाया, जो उनके लचीलेपन और स्कोरिंग कौशल को दर्शाता है। थोर्प ने न्यूज़ीलैंड के खिलाफ़ 53.2 की औसत के साथ एक उल्लेखनीय रिकॉर्ड बनाया। उनके 16 टेस्ट शतकों में से चार ब्लैक कैप्स के खिलाफ़ आए, जिसमें 2002 में क्राइस्टचर्च में बनाया गया उनका सर्वोच्च टेस्ट स्कोर नाबाद 200 भी शामिल है। अगस्त 2024 में थोर्प का निधन हो गया। इंग्लैंड और न्यूज़ीलैंड का आखिरी मुक़ाबला 2023 में वेलिंगटन के बेसिन रिजर्व में एक रोमांचक मैच में हुआ था, जहां न्यूज़ीलैंड ने एक रन से जीत दर्ज की थी। आगामी तीन टेस्ट मैचों की सीरीज 28 नवंबर को क्राइस्टचर्च में शुरू होगी, जबकि क्रिसमस से पहले वेलिंगटन और हैमिल्टन में अन्य टेस्ट मैच खेले जाएंगे।

रणजी ट्रॉफी 2024-25: श्रेयस अय्यर ने प्रथम श्रेणी करियर का तीसरा दोहरा शतक लगाया

नईदिल्ली(एजेंसी)। इस समय खेली जा रही रणजी ट्रॉफी 2024-25 में मुंबई क्रिकेट टीम के प्रमुख बल्लेबाज श्रेयस अय्यर ने जोरदार दोहरा शतक लगाया है।एलीट ग्रुप-ए में ओडिशा क्रिकेट टीम के खिलाफ मुकाबले में अय्यर ने मैच के दूसरे दिन के दौरान अपनी पारी को दोहरे शतक में तब्दील किया।बता दें कि यह मौजूदा सीजन में उनके बल्ले से निकलने वाली लगातार दूसरी शतकीय पारी है।आइए उनकी पारी और आंकड़ों पर एक नजर डालते हैं। मुंबई ने पहले बल्लेबाजी करते हुए जब 154 के स्कोर पर कप्तान अजिंक्य रहाणे (0) के रूप में तीसरा विकेट गंवाया, तब अय्यर क्रीज पर आए थे।अच्छी लय में नजर आ रहे अय्यर ने पहले दिन के ही दौरान अपने प्रथम श्रेणी करियर का 15वां शतक लगाया।उन्होंने मैच के दूसरे दिन के पहले सत्र के दौरान सिर्फ 201 गेंदों में अपना दोहरा शतक पूरा किया। अय्यर ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में अब तक 78 मुकाबले खेले हैं और इसकी 134 पारियों में लगभग 48 की औसत से 6,250 से अधिक रन बनाए हैं।उनके बल्ले से 15 शतक के अलावा 33 अर्धशतक भी निकले हैं। उन्होंने 2014 में अपने प्रथम श्रेणी करियर का आगाज किया था।लिस्ट-ए क्रिकेट में इस खिलाड़ी ने 144 मैच खेले हैं और 46.14 की औसत से 5,584 रन बनाए हैं। अय्यर ने अपने प्रथम श्रेणी करियर का कुल तीसरा और रणजी ट्रॉफी इतिहास का अपना दूसरा दोहरा शतक लगाया है।मुंबई के इस बल्लेबाज ने रणजी ट्रॉफी 2015 में पंजाब के खिलाफ ने 176 गेंदों में 200 रन की पारी खेली थी।

तेज गेंदबाज माइकल नेसर हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया ए मैच से बाहर

मेलबर्न(एजेंसी)। तेज गेंदबाज माइकल नेसर हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण भारत ए के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया ए मुकाबले के शेष मैच से बाहर हो गए हैं। उन्होंने दूसरे अनौपचारिक टेस्ट के पहले दिन चार विकेट लिए थे। नेसर, जिन्होंने 4-27 के आंकड़े के साथ वापसी की, सुबह 13वें ओवर की अपनी दूसरी गेंद के बाद अचानक से चोटिल हो गए। वे तुरंत मैदान से लंगड़ाते हुए बाहर चले गए, जिससे स्पष्ट संकेत मिला कि उन्हें पता था कि समस्या क्या है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) के प्रवक्ता ने ईएसपीएनक्रिकइन्फो से पुष्टि की कि नेसर को बाएं हैमस्ट्रिंग में चोट लगी है और वे मैच में फिर से गेंदबाजी नहीं कर पाएंगे। चोट की गंभीरता का पता लगाने के लिए उनका स्कैन किया जाएगा। नेसर को 23 अक्टूबर को अपने आखिरी शेफील्ड शील्ड मैच के बाद उसी हैमस्ट्रिंग में दर्द का अनुभव हुआ था, जब उन्होंने साउथ ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ क्वींसलैंड के लिए 48.5 ओवर गेंदबाजी की थी। इस दर्द के कारण उन्हें दो दिन बाद साउथ ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ़ घरेलू वनडे कप मैच से बाहर होना पड़ा। थोड़े आराम के बाद, वे बिना किसी परेशानी के ट्रेनिंग पर लौट आए और इस मैच से पहले वे अच्छी स्थिति में थे। हालांकि, इस सीज़न में तेज़ गेंदबाज़ों को एमसीजी आउटफ़ील्ड में चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जो ऑस्ट्रेलियाई फ़ुटबॉल लीग सीज़न के बाद रेत से भर गया है। ऑस्ट्रेलिया के मिशेल स्टार्क को भी एमसीजी में हाल ही में शील्ड और वनडे गेम में ऐंठन का सामना करना पड़ा और उन्होंने कहा कि आउटफ़ील्ड भारी और उस पर दौड़ना चुनौतीपूर्ण लगता है।

ट्रंप की जीत के बाद गोल्ड की कीमतों में गिरावट जारी; 76,000 रुपये के करीब पहुंचा

नई दिल्ली(एजेंसी)। अमेरिकी चुनावों के बाद गोल्ड की कीमतों में गिरावट का दौर जारी है। गुरुवार को एमसीएक्स पर गोल्ड का दिसंबर का फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट 0.37 प्रतिशत की गिरावट के साथ 76,369 रुपये प्रति 10 ग्राम पर खुला। वहीं, चांदी का दिसंबर फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट 0.24 प्रतिशत की मंदी के साथ 90,601 रुपये प्रति किलो पर खुला। अमेरिकी चुनावों में ट्रंप की जीत के बाद पिछले दो दिनों में गोल्ड के दाम 2,100 रुपये प्रति 10 ग्राम और चांदी की कीमतें 4,050 रुपये प्रति किलो तक गिर गए हैं। इंडियन बुलियन ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के मुताबिक, 24 कैरेट गोल्ड का दाम 76,570 रुपये प्रति 10 ग्राम, 22 कैरेट गोल्ड का दाम 74,720 रुपये प्रति 10 ग्राम, 20 कैरेट गोल्ड का दाम 68,130 रुपये प्रति 10 ग्राम और 18 कैरेट गोल्ड का दाम 62,201 रुपये प्रति 10 ग्राम है। जेएम फाइनेंसियल सर्विसेज लिमिटेड के ईबीजी- कमोडिटी एंड करेंसी रिसर्च, प्रणव मेर का कहना है कि गोल्ड और अन्य कमोडिटी में गिरावट देखने को मिली है। इसकी वजह अमेरिका में राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत होना है, जिसके कारण अमेरिकी डॉलर मजबूत हुआ है। हालांकि, सपोर्ट लेवल पर होने के कारण नुकसान की भरपाई हुई है। अब बाजार का फोकस अमेरिकी फेड के पॉलिसी के निर्णय पर है। आगे कहा, चार्ट पर गोल्ड की कीमतें एमसीएक्स पर 77,500 रुपये रुपये प्रति 10 ग्राम और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 2,700 डॉलर प्रति औंस के महत्वपूर्ण सपोर्ट लेवल पर पहुंच गई हैं। हम केवल तभी अधिक सुधार की उम्मीद करते हैं जब दिए गए सपोर्ट लेवल नहीं टूटता है और कायम रहता है। एलकेपी सिक्योरिटीज में वीपी रिसर्च एनालिस्ट - कमोडिटी एंड करेंसी, जतीन त्रिवेदी का कहना है कि सोने की कीमतों में उथल-पुथल देखी जा रही है। फिलहाल यह 78,500 रुपये से लेकर 77,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बनी हुई है। अमेरिकी चुनाव के नतीजों से डॉलर इंडेक्स मजबूत होकर 105 पर पहुंच गया है। इसके कारण सोना 77,500 रुपये प्रति 10 ग्राम और 2,700 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया है।

परमेसु बायोटेक ने सेबी के पास 600 करोड़ का आईपीओ दाखिल किया

नई दिल्ली(एजेंसी)। परमेसु बायोटेक लिमिटेड ने बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) के पास अपना ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (DRHP) दाखिल किया है। परमेसु बायोटेक भारत में मक्का आधारित विशेष उत्पादों के सबसे बड़े निर्माताओं में से एक है। विविध उत्पाद पोर्टफोलियो में देशी मक्का स्टार्च, संशोधित मक्का स्टार्च, तरल ग्लूकोज, माल्टोडेक्सट्रिन पाउडर, और सह-उत्पाद जैसे कि जर्म्स, ग्लूटेन, फाइबर, कॉर्न स्टीप लिकर, और समृद्ध फाइबर आदि शामिल हैं। कंपनी की योजना आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (IPO) के माध्यम से 6,000 मिलियन रुपये [600 crore] तक का फंड जुटाने की है। इक्विटी शेयर पूंजी (face value 5 each) के कुल निर्गम आकार में 5,200 मिलियन (520 crore) तक का नया निर्गम और ?800 मिलियन (80 crore) तक का ऑफर-फॉर-सेल (OFS) शामिल है। कंपनी की योजना शुद्ध आय का उपयोग निम्नलिखित के लिए करने की है: (i) मध्य प्रदेश में 1200 टीपीडी के नए संयंत्र की स्थापना के लिए पूंजीगत व्यय की आवश्यकता को वित्तपोषित करना, जिसकी अनुमानित कीमत 3,300 मिलियन [330 crore] है; (ii) कंपनी के कुछ उधारों का आंशिक या पूर्ण पुनर्भुगतान/पूर्व भुगतान, जिसकी अनुमानित कीमत 850 मिलियन [85 crore] है; और शेष सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए। कंपनी की वर्तमान स्थापित क्षमता 800 टीपीडी है।

सेलेकोर गैजेट्स लिमिटेड ने स्मार्ट टीवी के लिए करीना कपूर खान को ब्रांड एंबेसडर नियुक्त किया

नई दिल्ली। सेलेकोर गैजेट्स लिमिटेड (NSE SME: CELLECOR), जो भारत की सबसे तेजी से बढ़ती टेक्नोलॉजी कंपनियों में से एक है, ने बॉलीवुड सुपरस्टार करीना कपूर खान को अपने स्मार्ट टीवी की ब्रांड एंबेसडर के रूप में नियुक्त करने की घोषणा की। यह सहयोग सेलेकोर की विकास रणनीति में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य तेजी से बढ़ते स्मार्ट टीवी बाजार में अपनी उपस्थिति को मजबूत करना है। करीना की प्रतिष्ठित अपील और स्टाइलिश व्यक्तित्व के माध्यम से कंपनी भारतीय उपभोक्ताओं के साथ अपने संबंधों को गहरा करना चाहती है। करीना कपूर खान अपनी सुंदरता, करिश्मा और ट्रेंड सेटिंग प्रभाव के लिए जानी जाती हैं, जो सेलेकोर के उच्च गुणवत्ता, सुलभ और अभिनव इलेक्ट्रॉनिक्स के दृष्टिकोण के साथ पूरी तरह मेल खाती हैं। सेलेकोर स्मार्ट टीवी के चेहरे के रूप में, वह आधुनिक भारतीय परिवारों की बदलती जरूरतों को पूरा करता उत्कृष्ट मनोरंजन समाधान प्रदान करने की कंपनी की प्रतिबद्धता को पेश करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। उनकी गतिशील उपस्थिति और संबंधित करिश्मा उन्हें सेलेकोर के स्मार्ट टीवी रेंज का प्रतिनिधित्व करने के लिए आदर्श विकल्प बनाते हैं। जिससे कंपनी उच्च गुणवत्ता वाले होम एंटरटेनमेंट के लिए एक पसंदीदा ब्रांड बन सके। इस सहयोग का समर्थन एक व्यापक विपणन अभियान द्वारा किया जाएगा, जिसमें करीना कपूर खान टीवी विज्ञापनों, ऑफ़लाइन ब्रांडिंग, डिजिटल सामग्री और सोशल मीडिया प्रमोशनों में शामिल होंगी।

निविदा का प्रारुप

कार्यालय वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, जिला- रायपुर (छ.ग.)

निविदा विज्ञप्ति क्रमांकः- वपुअ/राय/रनि/7744/2024 — रायपुर, दिनांक 04.11.2024

निविदा आमंत्रण सूचना क्रमांक-02/2024-25

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जिला रायपुर के द्वारा थाना टिकरापारा परिसर में रिकार्ड रुम एवं कक्ष निर्माण कार्य कराये जाने हेतु मोहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती है. निविदा प्रपत्र अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय से आवेदन पत्र (आयकर चुकता प्रमाण पत्र सहित) के साथ निविदा प्रपत्र के मुल्य राशि रु. 750/- रु. का कोषालय/ राष्ट्रीयकृत/अधिकृत बैंकों से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रायपुर के नाम से लेखा शीर्ष 0055 पुलिस शीर्ष 800 अन्य प्राप्तियां के अंतर्गत जमा कर चालान की मूल प्रति रक्षित आरक्षी केन्द्र रायपुर को प्रस्तुत कर प्राप्त किये जा सकते हैं.

क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रु. में)	धरोहर राशि (रु. में)	निविदाकारों की श्रेणी
1.	थाना टिकरापारा परिसर में रिकार्ड रुम एवं कक्ष निर्माण कार्य हेतु.	20,00,000/-	15,000/-	ई- पंजीयन के अंतर्गत श्रेणी 'द' अथवा उससे उच्च श्रेणी.

1. निविदा फार्म विक्रय की अंतिम तिथि एवं समय - 24.11.2024 समय 17.00 बजे तक.
2. निविदा फार्म जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय - 26.11.2024 समय 15.00 बजे तक
3. टेक्निकल बिड खोलने का तिथि एवं समय - 26.11.2024 समय 16.00 बजे तक.
4. फायनेंशियल बिड खोलने का समय पृथक से अवगत कराया जावेगा.

नोटः- निविदा की नियम व शर्ते टेण्डर फार्म के साथ कार्यालयीन समय में रक्षित आरक्षी केन्द्र कार्यालय रायपुर से प्राप्त किये जा सकते हैं.

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक
जिला रायपुर (छ.ग.)

G-242503627/2

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 09 नवम्बर 2024

दो आईएफएस अधिकारियों का तबादला

रायपुर (आरएनएस)। छत्तीसगढ़ सरकार ने एक बार फिर से प्रशासनिक फेरबदल किया है, जिसमें दो आईएफएस अधिकारियों का तबादला किया गया है. यह आदेश वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा जारी किया गया है, जिसके तहत दो अधिकारियों को नई जिम्मेदारी सौंपी गई है. आदेश के अनुसार, तपेश कुमार झा (बैच 1989) वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम लिमिटेड, नवा रायपुर के प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रबंध संचालक के पद पर कार्यरत थे।

संक्षिप्त समाचार

मरीज के परिजनों से कराई अस्पताल की सफाई, स्टाफ नर्स और वार्ड आया निलंबित

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर. बलरामपुर जिले के वाड्रफनगर सिविल अस्पताल में एक मरीज के परिजनों से सफाई कराने के

मामले में कलेक्टर ने स्टाफ नर्स अमिता मिंज और वार्ड आया अनीता सिंह को निलंबित कर दिया है।इस मामले को स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने गंभीरता से लिया था और स्वास्थ्य विभाग बलरामपुर को इसकी जांच करने के निर्देश दिए गए थे। मामले की जानकारी मिलने पर स्वास्थ्य विभाग बलरामपुर को इसकी जांच करने के निर्देश दिए गए थे। प्रभारी चिकित्सा अधिकारी ने अपनी आरंभिक जांच में ड्यूटी पर उपस्थित स्टाफ नर्स और वार्ड आया को इसके लिए जिम्मेदार माना है। प्रभारी चिकित्सा अधिकारी की रिपोर्ट पर बलरामपुर जिले के कलेक्टर ने स्टाफ नर्स अमिता मिंज और वार्ड आया अनीता सिंह को उनके पदीय दायित्वों के प्रति घोर लापरवाही, अनुशासनहीन और अकर्मण्य मानते हुए निलंबित कर दिया है।

यशस्वी लोणकर को मिली पीएचडी की उपाधि

रायपुर (विश्व परिवार)। सेंट विंसेंट पैलौटी कॉलेज, कांपा रायपुर के शिक्षा विभाग में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत यशस्वी लोणकर को पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर द्वारा शिक्षा विषय पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। उनके शोध का शीर्षक ' इफ़ेक्ट ऑफ़ प्लांड इंटरवेंशन प्रोग्राम ऑन ट्रांसफोबिया ऑफ़ हाई स्कूल स्टूडेंट्स 'है। उन्होंने अपना शोध कार्य डॉ. पुष्पलता शर्मा, पूर्व उप-प्राचार्य कल्याण कॉलेज, भिलाई के निर्देशन में किया है।

कांग्रेस ने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी से की भाजपा की शिकायत

रायपुर (आरएनएस)। कांग्रेस के प्रतिनिधि मंडल ने रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत विद्युत पोल, रोड डिवाइडर, स्कूलों आदि शासकीय भवनों में भारतीय जनता पार्टी के बैनर और झंडे लगे होने की शिकायत मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी से किया। शिकायत में कहा गया है कि रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र में आदर्श आचार संहिता लागू है ऐसी स्थिति में रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न विद्युत पोल, रोड, डिवाइडर, स्कूलों आदि शासकीय भवनों में अवैधानिक रूप से भारतीय जनता पार्टी का बैनर और झंडे लगे हुये है, जो कि आदर्श आचार संहिता का घोर उल्लंघन है। अत: निवेदन है कि रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न विद्युत पोल, रोड डिवाइडर, स्कूलों आदि शासकीय भवनों में भारतीय जनता पार्टी का बैनर और झंडे को तत्काल हटाये जाने की कृपा की जाये और दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध समुचित कार्यवाही किये जाने की कृपा की जाये। उक्त कार्यवाही की सूचना हमें देने की कृपा करें। कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल में डॉ. देवा देवांगन, कु. शमीम रहमान, राम सोनकर, सादिक अली, इन्द्रजीत सिंह ठाकुर, ज्ञानेश्वर यदु उपस्थित थे।

प्रेस क्लब में नि:शुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन

80 पत्रकारों और उनके परिजनों ने कराया परीक्षण, दवाइयों का भी नि:शुल्क वितरण

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर प्रेस क्लब एवं श्रीधर औषधालय व पंचकर्म केन्द्र रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार, 8 नवंबर को दोपहर 12 से शाम 5 बजे तक नि:शुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन रायपुर प्रेस क्लब, स्व. मधुकर खेर स्मृति भवन, मोतीबाग में किया गया है। शिविर में डॉ. अभिषेक शर्मा, एमडी, पंचकर्म, बैंगलोर, डॉ. गुलशन कुमार सिन्हा, आयुर्वेद चिकित्सक द्वारा जोड़ों का दर्द, घुटना दर्द, कमर दर्द, गठिया वात, पंचकर्म संबंधी समस्त परामर्श एवं नाड़ी परीक्षण किया। शिविर में नि:शुल्क आयुर्वेदिक दवाईयों का वितरण भी किया गया। शिविर में प्रेस क्लब के 80 से अधिक सदस्यों और उनके

परिजनों ने अपने स्वास्थ्य का परीक्षण कराया।

प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर ने कहा कि प्रेस क्लब सदस्यों और उनके परिजनों के स्वास्थ्य की चिंता उनकी प्राथमिकता में है। इसलिए लगातार स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन प्रेस क्लब में किया जा रहा है। आयुर्वेद चिकित्सा की प्राचीनतम तकनीक है। इससे कई असाध्य रोगों से छुटकारा मिलता है। इसी को ध्यान में रखकर आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। प्रेस क्लब सदस्यों और उनके परिजनों के लिए आने वाले दिनों में इस तरह के और भी शिविर आयोजित किये जाएंगे। शिविर के आयोजन के लिए प्रेस क्लब अध्यक्ष श्री ठाकुर, महासचिव डॉ. वैभव शिव पांडेय, उपाध्यक्ष संदीप शुक्ला, कोषाध्यक्ष रमन हलवाई, संयुक्त सचिव तृप्ति सोनी अरविंद सोनवानी ने श्रीधर औषधालय एवं पंचकर्म केंद्र को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

10वीं और 12वीं कक्षा के लिए जनवरी के अंतिम सप्ताह में प्री-बोर्ड परीक्षा

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य के शासकीय हाईस्कूल और हायर सेकेंडरी विद्यालयों में कक्षा 10वीं और 12वीं के बोर्ड परीक्षा परिणामों में सुधार के उद्देश्य से इस साल से प्री-बोर्ड परीक्षा का आयोजन जनवरी के अंतिम सप्ताह में किया जाएगा। शिक्षा विभाग ने यह कदम छात्रों की बोर्ड परीक्षा की तैयारी को मजबूत बनाने और उनकी सफलता की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए उठाया है। स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव श्री सिद्धार्थ कोमल परदेशी ने सभी जिला कलेक्टर एवं जिला शिक्षा अधिकारियों को जारी निर्देश के अनुसार, प्री-बोर्ड परीक्षा प्रत्येक जिले द्वारा आयोजित की जाएगी, जिसमें छात्रों से पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे। साथ ही, 10वीं और 12वीं का पाठ्यक्रम 10 जनवरी 2025 तक पूर्ण करने के निर्देश भी दिए गए हैं ताकि छात्रों को पर्याप्त समय मिल सके। प्रश्न पत्र निर्माण के लिए जिलों में विषय विशेषज्ञों की समितियाँ गठित की जाएंगी। इन समितियों को प्रश्न पत्र निर्माण के लिए माध्यमिक शिक्षा मंडल के ब्लूप्रिंट का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा, जिससे परीक्षा का स्तर बोर्ड के अनुरूप सुनिश्चित किया जा सके।

स्वर्ण दम्पति सम्मान व भाईदूज का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय अखण्ड ब्राह्मण समाज द्वारा स्वर्ण दम्पति सम्मान भाईदूज समारोह वृन्दावन हाल रायपुर में भगवान परशुराम जी महाराज के तस्वीर की पूजा अर्चना मुख्य अतिथि विजयलक्ष्मी शर्मा संरक्षक, अध्यक्षता भारती किरण शर्मा प्रदेश अध्यक्ष, विशिष्ट अतिथि निशा तिवारी प्रदेशअध्यक्ष नारी प्रकोष्ठ, प्रकाश दीवान अध्यक्ष शिक्षा प्रकोष्ठ, मेघराज तिवारी संयोजक विप्र प्रकोष्ठ के आतिथ्य में पूजा अर्चना कर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, समाज के अतिविशिष्ट जन के सम्मान में पं.सूर्यानंद जी महराज ने अपने वक्तव्य में सुसंस्कृत परिवार व बच्चों के सामाजिक सरोकार मार्गदर्शन पर विस्तृत चर्चा की। भारती किरण शर्मा ने समाज के वर्तमान परिदृश्य व समसामयिक परिवार वातावरण में सुधार व मुखिया की भूमिका पर चर्चा करते हुए बच्चों में शास्त्रोंनमुख व्यवहार व संस्कार निर्मित कर परिवार संयोजन पर विशेष व्याख्यान दिये। निशा तिवारी जी के नेतृत्व में आयोजित सम्मान में स्वर्ण दाम्पत्य सुखद जीवन 50वर्षों से अधिक व्यतीत कर रहे। उमा तिवारी, कृष्ण प्रसाद तिवारी, सविता गौरहा सुरेश गौरहा जी, पन्ना लाल कौशल तिवारी जी, पुष्पा दीवान, महेन्द्रधर दीवान, निर्मला दीवान, अशोकधर दीवान, सरोजनी तिवारी, रामनिहोरा तिवारी, उषा दुबे, गोपाल कृष्ण दुबे, वत्सला शर्मा, अनन्त धर शर्मा, इन्द्राणी पाण्डेय, जेपी पाण्डेय, शकुन्तला शर्मा, अश्विनी कुमार शर्मा, सविता शर्मा, नरेंद्र शर्मा, किरण तिवारी, प्रशांत तिवारी, सीता चौबे, ब्यास नारायण चौबे, 16 दम्पति को साल, श्री फल, मोमेंन्टो से सम्मानित किया गया। ईरा पंत के दसुमधुर संगीत से सभा स्थल आल्हादित होता रहा। कार्यक्रम का संचालन संजय शुक्ला प्रदेश सचिव, शजिन्ता शुक्ला सांस्कृतिक सचिव द्वारा किया गया। सभी भाईयों को का पूजनकर वस्त्र, नारियल, पेंशन डायरी उपहार स्वरूप देकर सम्मानित किया गया व दीर्घायु कामना की गयी। कार्यक्रम में सरिता तरुण शर्मा उपाध्यक्ष, प्रीति शुक्ला कोषाध्यक्ष, अल्का दीवान, संरक्षक, सीमा दीवान उपाध्यक्ष नारी प्रकोष्ठ, पूर्णिमा तिवारी प्रदेश सचिव नारी प्रकोष्ठ, प्रियंका तिवारी, सुर्यानंदजी महराज, उमेश मिश्रा सह सचिव, प्रकाश दुबे, हेमलाल शर्मा जिलाध्यक्ष बीरगांव, जिलाध्यक्ष ना.प्र.बीरगांव, पं.लक्ष्मीकांत जी महराज, यश महराज, रानी दुबे व सभी धमतरी ईकाईजिला पदाधिकारी, पदाधिकारियों, सदस्यों व विप्रजन की उपस्थिति रही।अन्त में निशा तिवारी प्रदेशाध्यक्ष नारी प्रकोष्ठ ने सभी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया।

राज्य अलंकरण समारोह : समाजसेवी सुभाष अग्रवाल दानवीर भामाशाह सम्मान से हुए सम्मानित

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य सरकार ने राज्य अलंकरण पुरस्कारों से हस्तियों को पुरस्कृत किया। इस वर्ष कुल 36 प्रमुख व्यक्तियों को उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के सम्मान में सम्मानित किया गया। समाजसेवी सुभाष अग्रवाल

को दानवीर भामाशाह सम्मान उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ दिया गया। यह जानकर खुशी होता है कि यही सम्मान उनके पिताश्री स्व. निरंजन लाल अग्रवाल को भी प्राप्त हुआ था। यह पुरस्कार न केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों को मान्यता देता है, बल्कि समाज में उनके द्वारा किए गए योगदान को भी उजागर करता है। वंदना ग्रुप आफ इंडस्ट्रीज के निदेशक सुभाष अग्रवाल को दानशीलता, सौहार्द एवं अनुकरणीय सहायता के लिए पुरस्कार दिया गया। सुभाष अग्रवाल ने अपने पिता की प्रेरणा से समाज सेवा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। उन्होंने गंगा डायग्नोस्टिक सेंटर अस्पताल की स्थापना की, जहां लगभग नि:शुल्क परीक्षण और उपचार की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। यह अस्पताल समाज के गरीब वर्ग के लिए एक आशा की किरण साबित हुआ है। सुभाष अग्रवाल ने गरीबों के लिए वातानुकूलित अपना घर आश्रम की भी स्थापना की है, जिससे जरूरतमंदों को एक सुरक्षित आवास मिल सके। उनके द्वारा किए गए ये प्रयास समाज में सहानुभूति, सहायता और मानवता के मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। उनकी ये अनुकरणीय सेवाएं समाज के प्रति उनके समर्पण और दानशीलता का परिचायक हैं। डोंगरगढ़ के शशिकांत द्विवेदी को सहकारिता के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए ठाकुर प्यारेलाल सिंह सम्मान देने की घोषणा की गई है। यह सम्मान उनके द्वारा सहकारिता के क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण योगदान को मान्यता देता है और उनके प्रयासों को सराहता है। इसके अलावा, उन्होंने वीआईपी रोड पर स्थित वातानुकूलित निरंजन धर्मशाला की भी शुरुआत की, जो पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर बुक की जाती है। इस धर्मशाला का उद्देश्य जरूरतमंदों को आरामदायक आवास प्रदान करना है। वंदना ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के निदेशक सुभाष अग्रवाल को उनकी दानशीलता, सौहार्द और अनुकरणीय सहायता के लिए एक पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बिलासपुर रेल मंडल के करकेली स्टेशन को तीसरी रेल लाइन से जोड़ने के लिए करकेली स्टेशन में किया जायेगा यार्ड मॉडिफिकेशन का कार्य

फलस्वरुप कुछ यात्री गाड़ियों का परिचालन रहेगा प्रभावित

रायपुर (विश्व परिवार)। अधोसंरचना विकास हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में अनेक परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। इसी प्रकार बिलासपुर-कटनी के बीच तीसरी रेल लाइन इस रेलवे की एक महत्वपूर्ण तथा व्यस्त रेल मार्ग है, जो इस पूरे क्षेत्र को उत्तर भारत से जोड़ती है। परिचालन को और भी सुचारू तथा नई गाडियों के मार्ग प्रशस्त करने के लिए नई लाइनों का निर्माण कार्य किया जा रहा है। इससे आधारभूत संरचना में विकास के साथ नई यात्री सुविधाओं में वृद्धि के साथ यात्री ट्रेनों की समय बद्धता में वृद्धि होगी। इसी दिशा में सक्रिय रूप से कार्य करते हुए बिलासपुर से कटनी के बीच तीसरी लाइन का कार्य किया जा रहा है। इसके अंतर्गत बिलासपुर- कटनी सेक्शन के करकेली रेलवे स्टेशन को तीसरी लाइन से जोड़ने का कार्य किया जाएगा।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के अनुनपुर-कटनी सेक्शन में कुल 165.52 किलोमीटर रेलवे लाइन का कार्य किया जा रहा है। जिसकी कुल लागत 1680 करोड़ रुपये किया जा रहा है। अब तक इस सेक्शन में 101 .40 किलोमीटर रेलवे लाइन का कार्य पूर्ण किया जा चुका है।

करकेली रेलवे स्टेशन को तीसरी रेललाइन को जोड़ने का यहा कार्य दिनांक 17 नवम्बर से 19 नवम्बर, 2024 तक (विभिन्न तिथियो में) किया जायेगा। इस कार्य के पूर्ण होते ही गाडियों की समयबद्धता एवं गति में तेजी आयेगी।

बिलासपुर-कटनी तीसरी लाइन परियोजना दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की महत्वपूर्ण परियोजना है, जिससे भविष्य में यात्री सुविधाओं में वृद्धि होगी

इस कार्य के फलस्वरूप दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से होकर चलाने वाली कुछ यात्री गाड़ियों का परिचालन प्रभावित रहेगा। जिसका विवरण इस प्रकार है-

रद्द होने वाली गाडियां- दिनांक 16 नवम्बर से 19 नवम्बर, 2024 तक जबलपुर से चलने वाली 11265 जबलपुर-अम्बिकापुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 17 नवम्बर से 20 नवम्बर, 2024 तक अम्बिकापुर से चलने वाली 11266 अम्बिकापुर-जबलपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 15 नवम्बर से 19 नवम्बर, 2024 तक बिलासपुर से चलने वाली 18247 बिलासपुर-रीवा एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 16 नवम्बर से 20 नवम्बर, 2024 तक रीवा से चलने वाली 18248 रीवा-बिलासपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 18 नवम्बर, 2024 को रीवा से चलने वाली 11751 रीवा-चिरमिरी पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 19 नवम्बर, 2024 को चिरमिरी से चलने वाली 11752 चिरमिरी-रीवा पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 17 नवम्बर, 2024 को दुर्ग से चलने वाली 18203 दुर्ग-कानपुर एक्सप्रेस रद्द रहेगी।18 नवम्बर, 2024 को कानपुर से चलने वाली 18204 कानपुर-दुर्ग एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 14 नवम्बर, 2024 को दुर्ग से चलने वाली 18205 दुर्ग-नौतनवा एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 16 नवम्बर, 2024 को नौतनवा से चलने वाली 18206 नौतनवा-दुर्ग एक्सप्रेस रद्द रहेगी। 19 नवम्बर, 2024 को चिरमिरी से चलने वाली 05755 चिरमिरी-अनुनपुर पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 19 नवम्बर, 2024 को अनुनपुर से चलने वाली 05756 अनुनपुर- चिरमिरी पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 17 नवम्बर से 19 नवम्बर, 2024 तक चिरमिरी से चलने वाली 08269 चिरमिरी-चंदिया रोड पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 17 नवम्बर से 19 नवम्बर, 2024 तक चंदिया रोड से चलने वाली 08270 चंदिया रोड-चिरमिरी- पैसेंजर स्पेशल रद्द रहेगी। 16 नवम्बर से 19 नवम्बर, 2024 तक कटनी से चलने वाली 06617 कटनी-चिरमिरी मेमू स्पेशल रद्द रहेगी। 17 नवम्बर से 20 नवम्बर, 2024 तक चिरमिरी से चलने वाली 06618 चिरमिरी-कटनी मेमू स्पेशल रद्द रहेगी। रेल प्रशासन यात्रियों को होने वाली असुविधा के लिए खेद व्यक्त करता है तथा सहयोग की आशा करता है।

अर्थशास्त्र विभाग कला संकाय द्वारा 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी में हाइब्रिड मोड माध्यम से अर्थशास्त्र विभाग कला संकाय द्वारा आयोजित कार्यशाला में 200 से अधिक विद्यार्थी और शोधकर्ता हुए शामिल। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि प्रोफेसर रविन्द्र के ब्राह्मे और प्रोफेसर गोवेर्धन भट्ट रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया तत्पश्चात अतिथियों के स्वागत पुष्पगुच्छ भेंट कर यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर एस.के.सिंह और कुलसचिव डॉ. सौरभ कुमार शर्मा द्वारा किया गया।

अपने स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रोफेसर एस.के.सिंह ने अपने विचार व्यक्त कर कहा कि मार्गदर्शक सिद्धांत के लिए आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का यह आयोजन भारतीय ज्ञान प्रणाली, प्राचीन ज्ञान, बुद्धिमत्ता एवं विभिन्न नवीन शैक्षणिक प्रणालियों के लिए एक विस्तृत श्रृंखला है।

डीन ऑफ़ आर्ट्स डॉ.मनीष पाण्डेय ने बताया कि भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य ज्ञान परंपरा का वास्तविक महत्व बढ़ाना है। नई शिक्षा नीति के संपूर्ण पाठ्यक्रम में भारतीय परम्परा के कार्य्वयन को समझना है। भारतीय ज्ञान प्रणाली औपचारिक रूप से जीवंत परंपरा है जिसको हम रोज अपने दैनिक जीवन में अपनाते है जो हजारों वर्ष पुरानी पद्धति है। आई. के.एस सेटर पं.रविशंकर शुक्ल विश्विद्यालय रायपुर के निदेशक मुख्य अतिथि प्रोफेसर रविन्द्र के ब्राह्मे ने अपने उद्बोधन में कहा है कि भारतीय ज्ञान परंपरा बहुत रोचक विषय है जिससे भारतीय ज्ञान का भविष्य में वृहद रूप से अनुसंधान सामने आएंगे। भारतीय ज्ञान परम्परा के आधार पर हमारी सोच का निर्माण हुआ हैं और इस ज्ञान का प्रयोग आर्थिक विकास के लिए सदेव होगा। प्राचीन समय मे आज से दो हजार साल पहले दुनिया के अर्थव्यवस्था को 25 से 30 प्रतिशत का योगदान भारतीय अर्थव्यवस्था से होता था और आधुनिक युग में आधुनिक सिद्धांतों का आधार हमारा भारतीय ज्ञान प्रणाली हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक और आर्थिक विकास में सहयोग रहेगा।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र में प्रोफेसर गोवेर्धन भट्ट सिविल इंजीनियरिंग विभाग, एनआईटी ने कार्यशाला में बताया कि पानी भोजन से भी अधिक महत्पूर्ण है। पानी ही इन सभी रूपों को ग्रहण करता है और पानी ही मध्यस्थता करता है। पानी सभी प्रकार के जीवन के लिए आवश्यक है। पानी जो ब्रह्मांड में बना है। उन्होंने वैदिक ऋचाओं और सूक्तों के उधारण देते हुए बताया कि बारिश का पानी हमेशा अमृततुल्य है, इसकी तुलना हम धरती पर उपलब्ध कोई भी अन्य स्वादिष्ट पेय पदार्थ जैसे दूध घी से कर सकते हैं।

यूनिवर्सिटी के कुल सचिव डॉ. सौरभ कुमार शर्मा ने इस समारोह पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज यह एक दिवशी राष्ट्रीय पाठशाला प्राचीन सनातन विषय पर चिंतन एवं मठ करने के लिए आयोजित की गई है। विभिन्न विषयों के ज्ञान के साथ-साथ कुछ अलग-अलग ज्ञान और अध्यात्म से समृद्ध ज्ञान का अध्यन आवश्यक हो गया है। हर पाठ्यक्रम को भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ जोड़ा जा रहा है। महाउपनिषद के अनुसार भारत की ज्ञान परंपरा तभी से प्रारंभ होती है जब से मानवता का विकास हुआ अत: हम संपूर्ण विश्व को अपना परिवार मानते हैं। सरकार ने नई शिक्षा नीति में ऋषि-मुनियों के ज्ञान को शामिल किया है।

भारतीय रेलवे ने एक महीने तक चले विशेष अभियान 4.0 में 2.5 लाख लोक शिकायतों का किया समाधान

सांसदों के 1065 संदर्भों का निपटारा किया और राज्य सरकार के 138 मामलों का समाधान किया

रायपुर (विश्व परिवार)। रेल मंत्रालय ने 2 अक्टूबर 2024 को शुरू की गई एक महीने की पहल, विशेष अभियान 4.0 को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। हाल ही में संपन्न हुए इस अभियान को स्वच्छता की संस्कृति को बढ़ावा देने, संगठनात्मक दक्षता में सुधार करने और भारतीय रेलवे में कर्मचारियों व जनता को उद्देश्यपूर्ण तरीके से जोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी के नेतृत्व में और रेलवे बोर्ड के सचिव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की सक्रिय निगरानी में चलाए गए इस अभियान में सभी स्तरों पर रेलवे कर्मचारियों की व्यापक भागीदारी रही, जिससे यह एक शानदार सफलता बन गई।

विशेष अभियान 4.0 की प्रमुख उपलब्धियां

व्यापक स्वच्छता अभियान- भारतीय रेलवे में कुल 56, 168 स्वच्छता अभियान चलाए गए, जिनमें कार्यस्थल की स्वच्छता और रेलवे स्टेशनों की सफाई पर ध्यान केंद्रित किया गया। स्क्रैप निपटान पर विशेष जोर दिया गया, जिससे 12.15 लाख वर्ग फुट जगह खाली हुई और 452.40 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित हुआ।

- **रेल मंत्रालय ने 56, 168 स्वच्छता अभियान चलाए और अभियानों की यह संख्या 50, 000 के निर्धारित लक्ष्य से अधिक है**
- **रेलवे ने स्क्रैप निपटान के माध्यम से 452.40 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया और 12.15 लाख वर्ग फुट जगह खाली हुई**

लंबित मामलों में कमी- इस अभियान से विभिन्न विभागों में लंबित मामलों के समाधान में उल्लेखनीय प्रगति हुई- सांसदों के 1065 संदर्भों का पूर्णत: समाधान किया गया। राज्य सरकार के 138 संदर्भों का सफलतापूर्वक समाधान किया गया। पीएमओ के 69 संदर्भों में से 65 का निपटारा किया गया। 139 संसदीय आश्वासनों में से 55 पूरे किए गए। 2.5 लाख लोक शिकायतों का समाधान किया गया। 1427 लोक शिकायत अपीलों का समाधान किया गया।

फाइलों की समीक्षा और प्रबंधन- उपयुक्त अभिलेखन और छंटाई के लिए 1.6 लाख से अधिक फाइलों की समीक्षा की गई, जिसके परिणामस्वरूप अभिलेख प्रबंधन को सुव्यवस्थित करने के लिए 89, 000 से अधिक पुरानी फाइलों को हटाया गया।

रेल चौपाल- सामुदायिक सहभागिता- नई दिल्ली, जयपुर, चेन्नई, नागपुर, कोटा, जोधपुर, लखनऊ, पुणे, भोपाल, कोलकाता सहित अन्य प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर विशेष रेल चौपालों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में स्वच्छता के बारे में जागरूकता बढ़ाने, जन सहभागिता में सुधार लाने, शिकायतों का समाधान करने और पर्यावरणीय स्थिरता प्रयासों के तहत एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक में कमी को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

सोशल मीडिया के माध्यम से सहभागिता- इस अभियान को सोशल मीडिया पर 3713 ट्वीट और अनेक बार रीपोस्ट के साथ महत्वपूर्ण समर्थन मिला, जिससे स्वच्छता आंदोलन में व्यापक जनरुचि और भागीदारी देखने को मिली।

विशेष अभियान 4.0 ने न केवल स्वच्छता और दक्षता में उल्लेखनीय परिणाम हासिल किए हैं, बल्कि भारतीय रेलवे में कार्यस्थल संस्कृति को नया रूप देने में भी मदद की है। स्वच्छता को एक नियमित आदत के रूप में संस्थागत बनाकर, रेल मंत्रालय ने स्वच्छ और संगठित कामकाजी माहौल के महत्व पर जोर दिया है तथा संदर्भों के शीघ्र निपटान व स्वच्छता को एक नियमित आदत बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहेगा।

सहायक ग्रेड-2 प्रदीप उपाध्याय के सुसाईड मामले की जांच करेंगे रायपुर के संभाग आयुक्त

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने तहसीलदार कार्यालय रायपुर में सहायक ग्रेड-2 के पद पर कार्यरत् श्री प्रदीप उपाध्याय की आत्महत्या मामले की गहन जांच के निर्देश दिए है। मुख्यमंत्री के निर्देश के परिपालन में सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा इसकी जिम्मेदारी रायपुर के संभाग आयुक्त को सौंपी गई है। सामान्य प्रशासन विभाग मंत्रालय महानदी भवन द्वारा आज 8 नवम्बर को उक्ताशय का आदेश जारी कर दिया गया है। सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा रायपुर के संभाग आयुक्त को दिवंगत शासकीय सेवक श्री प्रदीप उपाध्याय सहायक वर्ग-2 द्वारा अपने सुसाईड नोट में विभागीय अधिकारियों द्वारा प्रताड़ित किए जाने एवं छवि खराब करने के आरोपों की जांच कर तथ्यात्मक जांच प्रतिवेदन कार्वाई की अनुशंसा सहित प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया गया है।

चोट एवं जलने के बाद घाव की प्लास्टिक सर्जरी
कालड़ा बर्न एवं प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी सेंटर
आर.के.सी.के सामने, चौबे कालोनी एवं पचपेढ़ी नाका, धमतरी रोड, कलर्स मॉल के पास, रायपुर
कॉल : 9827143060/8871003060
Ajay Advt.

लोन लेने के लिए ITR बनवायें मात्र 500/- में
शेखर गुप्ता ONLYTDS.COM
ITR GST
हमारे TAX Expert आपकी मदद हेतु तैयार है।
G.S.T. रिटर्न Food Licence
इन्कम TAX फाईल M.S.M.E. रजिस्ट्रेशन
TDS रिफंड प्रोजेक्ट रिपोर्ट
IT नोटिस डिजिटल सिग्नेचर
9300755544, 8878655544

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354